सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जून, 2012 | वर्ष 11 | अंक 04

रब की रस्सी थाम लो प्यारे

करो महब्बत आपस में तुम
हरगिज़ हरगिज़ लड़ो नहीं
एक ख़ुदा के बन्दे हो तुम
बाहम नफ़रत करो नहीं
नबी मुहम्मद के पैरो हो
ग़ैर के पीछे चलो नहीं
कुआँ पर हो ईमां रखते
ग़ैर ख़ुदा से डरो नहीं
रब की रस्सी थाम लो प्यारे
फ़िर्क़ा बन्दी करो नहीं
मांगो रब से नबी पे रहमत
बुख़्ल तुम इस में करो नहीं

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
इल्म और मुसलमान	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	8
हुकूक़ व फ़राइज़	मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी	11
आइये हम सब मिल कर	मौलाना सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी	15
मदरसों के छात्रों से कुछ बातें	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	17
दिल और गुर्दों की रुकावटें	इदारा	19
इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	20
तंत्र–मंत्र और मीडिया	सी0 के0 रहमानी	23
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	27
डॉक्टरों का नैतिक दायित्व	डॉ0 मुहम्मद रज़ीउल इस्लाम नदवी	29
हिजरी, ईस्वी और विक्रमी सन्	इदारा	30
खाद्य पदार्थों में मिलावट	सौजन्य से "कान्ति"	35
नातिया दोहे	डॉ0 अज़ीज़ ख़ैराबादी	36
रब की रस्सी थाम ले प्यारे	इदारा	36
कौन थे मौलवी इस्माईल		37
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूरः-ए-बक़रः

अनुवाद : ऐ ईमान वालो! तुम न कहो राअिना और कहो उन्ज़ुर्ना और सुनते रहो, और काफिरों को अज़ाब (ईश्वरीय दण्ड) है दर्दनाक[1(104)], दिल नहीं चाहता उन लोगों का जो काफिर हैं किताब वालों में से, और न बहुदेववादियों में इस बात को कि उतरे तुम पर कोई अच्छी बात तुम्हारे रब की तरफ से और अल्लाह ख़ास कर लेता है अपनी रहमत के साथ जिसको चाहे, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल (श्रेष्ठता) वाला है[2(105)]। जो निरस्त करते हैं हम कोई आयत या भुला देते हैं तो भेजते हैं उससे बेहतर या उसके बराबर, क्या तुझको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज़ पर नियंत्रण रखने वाला है[3(106)]।

तफ्सीर (व्याख्या):

1. यहूदी आकर आपकी मजलिस (गोष्ठी) में बैठते और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें सुनते। कुछ बातें जो अच्छी तरह न सुनते उसको दोबारा सुनना चाहते तो कहते "राअिना" (अर्थात हमारी ओर ध्यान दो और हमारी रिआयत करो) ये जुम्ला उनसे सुन कर कभी मुसलमान भी कह देते। अल्लाह ने मना किया कि इस वाक्य को न कहना, यदि कहना हो तो "उन्ज़ुर्ना" कहो, इसका अर्थ भी यही है। और शुरु से ही ध्यान लगा कर सुनते रहो तो दोबारा पूछना ही न पड़े। यहूद इस लफ़्ज़ को बदनियती और फरेब से कहते थे, इस लफ़्ज़ को ज़बान दबा कर कहते तो "राअीना" हो जाता (अर्थात हमारा चरवाहा) और यहूद की ज़बान में राअिना बेवकूफ को कहते हैं।

2. अर्थात काफिर (यहूद हों या मक्का के बहुदेववादी) क़ुर्आन को तुम पर कदापि पसन्द नहीं करते बल्कि यहूद तमन्ना करते हैं कि आखिरी नबी (संदेष्टा) बनी इस्राईल में पैदा हो और मक्का के बहुदेववादी चाहते हैं कि हमारी क़ौम में से हो, मगर ये तो अल्लाह के फ़ज़्ल की बात है कि अनपढ़ लोगों में आखिरी नबी को पैदा किया।

3. यह भी यहूद का ताना था कि "तुम्हारे ग्रन्थ में कुछ आयतें निरस्त होती हैं, यदि ये ग्रन्थ अल्लाह की ओर से होता तो जिस दोष के कारण अब निरस्त हुई उस दोष की सूचना क्या अल्लाह को पहले से न थी"। अल्लाह ने फरमाया "दोष (ऐब) न पहली बात में था, न पिछली बात में, लेकिन शहंशाह उचित समय देख कर जो चाहे आदेश दे, उस समय वही उचित था और अब दूसरा आदेश उचित है।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

जिन चीज़ों से पनाह मांगनी चाहिए

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सरजिस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी यात्रा पर चले जाते तो यात्रा की कठोरता, राहत के बाद तकलीफ, उत्पीडित के श्राप से पनाह मांगते थे।

(तिर्मिज़ी—नसाई)

चढ़ते और उतरते क्या कहना चाहिए- हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि जब हम ऊँचाई पर चढ़ते थे तो तक़बीर कहते थे और ढ़लान की तरफ आते तो तस्बीह करते थे। (बुख़ारी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके लश्करी जब ऊँचाई पर चढ़ते तो तक्बीर कहते थे और जब ऊँचाई से उतरते थे तो तस्बीह करते थे। (अबूदाऊद)

हज़रत उमर रज़ि0 कहते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज और उमरः से वापस होते थे या किसी घाटी पर चढ़ते थे तो तीन तक्बीर कहते थे।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं सफर करने वाला हूँ, आप मुझे कुछ नसीहत कीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, अल्लाह से डरते रहना, और हर ऊँचाई पर चढ़ते हुए तक्बीर कहना। जब आदमी चला गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! उसकी दूरी को लपेट दे और उस पर सफर को आसान करदे। (तिर्मिज़ी)

धीमी आवाज़ के साथ दुआ व ज़िक्र- हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 कहते हैं कि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहा करते थे। जब किसी मैदान में पहुंचते तो बड़ी ऊँची आवाज़ से तक्बीरे तहलील करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, ऐ लोगो! अपने ऊपर नर्मी करो, इसलिए कि तुम किसी बहरे या ग़ायब को नहीं पुकारते हो, तुम तो उसको पुकारते हो जो सुनने वाला करीब है और तुम्हारे साथ है। (बुख़ारी—मुस्लिम)

मुसाफिर की दुआ कुबूल होती है- हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा की तीन आदमियों की दुआएं ज़रूर कुबूल होती हैं,

1. मज़लूम की दुआ
2. मुसाफिर की दुआ
3. बाप की दुआ बेटे के लिए।

(अबूदाऊद—तिर्मिज़ी)

❖❖❖

इल्म और मुसलमान

--डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

इस्लाम ने हर मुसलमान पर इल्म का हासिल करना फ़र्ज़ किया है। जिस की दलील यह हदीस है "तलबुल् इल्मि फ़रीज़तुन अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन (मुस्लिम)" (इल्म का हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज़ है चाहे वह मर्द हो या औरत)। इस्लाम नाम ही है अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में ज़रूरी मालूमात हासिल करके अल्लाह के बारे में ईमान लाने का, जो शख्स ईमान लाता है वह इसका इल्म रखता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और इसकी गवाही देता है, इसी तरह वह जानता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं वह रसूल का मतलब भी समझता है और गवाही देता है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल है। यह तौहीद व रिसालत का इल्म चाहे इजमालन हो चाहे तफ़्सीलन, बहुत ही ऊँचा और आला इल्म है जिससे गैर मुस्लिम महरूम हैं। लिहाजा जिहालत और मुसलमान दोनों जमा नहीं हो सकते।

हदीस शरीफ में जो इल्म का हासिल करना फर्ज़ बताया गया है वह आकिल बालिग़ मुसलमान (मर्द और औरत) पर फर्ज़ बताया गया है। सवाल यह है कि वह कौन सा इल्म है जो फ़र्ज़ है और उसकी मिकदार क्या है?

एक मुसलमान जब यह मान और जान लेता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा किसी की इबादत जाइज़ नहीं तो उसके लिए ज़रूरी हो जाता है कि वह जाने कि इबादत क्या है, और गैर की इबादत से क्या मतलब है ताकि वह उससे बचे, ज़ाहिर है इन मालूमात के लिए उसके पास अपने तौर पर कोई ज़रिआ नहीं, अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जिसके ज़रिए ला इलाह इल्लल्लाह सिखाया उसी के ज़रिए अपनी इबादत और गैर की इबादत का तआरुफ (परिचय) भी कराया। यह जानना ज़रूरी हुआ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह की तरफ से जो तालीमात हमारे लिए लाए हैं हम उनको सीखें, उन का इल्म हासिल करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 23 सालों तक अल्लाह की तालीमात उम्मत को पहुंचाते रहे, जिसमें अल्लाह का कलाम कुर्आन मजीद है और आपकी हदीसें हैं।

उम्मत पर यह फर्ज़ है कि यह सारी तालीमात (कुर्आन व हदीस) को हासिल करे और उसकी हिफ़ाज़त करे और उसको बराबर आगे मुन्तकिल करता रहे अगर्चि इन तालीमात की ख़ास तौर से कुर्आन शरीफ की हिफाजत का अल्लाह ने खुद ज़िम्मा

लिया है और वह इसी तरह होगा कि लोग उसको हासिल करते और आगे बढ़ाते रहेंगे। लेकिन यह काम उम्मत पर फ़र्ज़ किया गया, मगर यह फ़र्ज़ फ़र्ज़े ऐन नहीं है, फ़र्ज़े किफ़ाया है कि उम्मत के कुछ लोग अदा करते रहेंगे तो यह काम सब की तरफ़ से हो जाएगा। लेकिन इस पूरे इल्म से कुछ इल्म हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है जिसे हम ज़रूरियाते दीन का इल्म कहते हैं। यही इल्म हर मुसलमान (मर्द–औरत) जो बालिग़ हो चुक है उस पर फ़र्ज़ है। आज उम्मत में जितने भाई हैं जो आक़िल बालिग़ हैं मगर यह नहीं जानते कि उन पर कौन सा इल्म फर्ज़ है और उसके बिना मरने के बाद की ज़िन्दगी में क्या होगा? बल्कि वह तो मरने के बाद की ज़िन्दगी ही के बारे में कुछ नहीं जानते। ऐसी हालत में जो दीन का इल्म रखते हैं उन पर फर्ज़ है कि ऐसे भाइयों से मिलें और उनको आख़िरत की ज़िन्दगी के बारे में बताएं और उन तक ज़रूरियाते दीन का इल्म पहुँचाएं।

यह फरीजा हर दीनदार का है जैसे भी हो इस फरीज़े की अदाएगी के बिना नजात मुश्किल हो जाएगी। देखा यह गया है कि इनफ़िरादी तौर पर पूरा एहसास रखने के बावजूद हर दीनदार से अदा नहीं हो पाता, उसकी शक्ल यह होना चाहिए कि सियासी मक़ासिद से अलग हो कर जो जमाअत यह काम कर रही हो उसके साथ मिल कर इम्कान भर यह काम करें। मेरे नज़दीक तब्लीग़ी जमाअत यह काम अच्छे तौर पर अंजाम दे रही है उसके साथ मिलकर यह काम करते रहना चाहिए। कुछ लोग तालीमात में पढ़ी जाने वाली बाज़ कमजोर रिवायात का बहाना लेकर उससे दूर रहते हैं। और लोगों को दूर रखने की कोशिश करते हैं, अल्लाह उन्हें समझ दे अगर आपको कमज़ोर अहादीस का इल्म है तो आप उन्हें कमजोर समझें लेकिन जमाअत से जो उमूमी फाइदा हो रहा है उसमें रुकावट तो न बनें। फिर जमाअत के ज़िम्मेदारों ने खुद ही फजाइल आमाल की जगह मुन्तख़ब अहादीस मुरत्तब कर दी है, जमाअत के लोगों को चाहिए कि तालीमात में उसी को पढ़ें ताकि बुरा चाहने वालों का मुँह बंद हो सके।

ज़रूरियाते दीन – कल्म–ए–तय्यिबा और कल्म–ए–शहादत अरबी में याद हो, फिर उनके माने भी ज़िहन में उतारें, ईमाने मुजमल व मुफस्सल अरबी में याद करें और उनके माना ज़िहन नशीन करें। पाकी–नापाकी, नजासत वगैरह का इल्म जिनका रोज़ की ज़िन्दगी से साबिक़ा रहता है उनका इल्म हो।

वुज़ू और उससे मुतअल्लिक तमाम ज़रूरी बातें, गुस्ल और उससे मुतअल्लिक तमाम बातों का इल्म हो।

अज़ान व इकामत के कलिमात याद हों, कुर्आन मजीद की कुछ सूरतें जबानी याद हों जिनसे नमाज़ अदा की जा सके। पूरी नमाज़ अच्छी तरह सीखें, उसमें पढ़े जाने वाले कलिमात, तस्बीहात, तशह्हुद, दुरूद, दुआएं वगैरह ज़बानी याद हों। वित्र पढ़ने के लिए दुआए

कुनूत याद हो, नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा और उसकी दुआएं याद हों।

रोज़े के ज़रूरी मसाइल, जक़ात का निसाब और ज़कात के ज़रूरी मसाइल याद हों।

हज कब फ़र्ज़ होता है कम से कम इतना मालूम हो। रोज़ी कमाने के लिए कौन सा पेशा नाजाइज़ है यह मालूम हो, कौन से जानवर हलाल हैं और उनके ज़ब्ह करने का तरीक़ा क्या है मालूम हो। यह वह ज़रूरी उलूम हैं जिनके हासिल किये बिना इस्लामी ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी जा सकती। ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरियात में इस्लामी तालीमात क्या हैं इसके लिए चाहिए कि उलमा से राबिता करें। अल्लाह तआला हम सब को अपनी मरज़ीयात पर चलाए, आमीन।

रहे दुनियावी उलूम तो इस दुनिया में रहने के लिए उनका इल्म भी ज़रूरी है लेकिन उसके लिए जो कुछ आज कल हो रहा है उससे हमारे पाठक अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, और कोई भी अपनी वुसअत के मुताबिक दुनियावी उलूम व फ़ुनून हासिल करने में कोताही नहीं करता, इस सिलसिले में मैं कोई तरगीब नहीं देता, हमारे सामने दुनियावी उलूम व फ़ुनून हासिल करने में जो मुश्किलात हैं उनका बयान बे फ़ाइदा है लेकिन कुछ इशारा किया जाता है। जहाँ तक मुफ़्त तालीम का निजाम है उसमें वज़ीफ़ा पाने वाले तलबा का वज़ीफ़ा महकमें से भारी तनख़्वाह पाने वालों की मज़ीद आमदनी का जरीआ है, दोपहर की खिचड़ी में कितनी बार अख़बार में आया कि कहीं छिपकली तो कहीं झींगुर निकला, साफ़–सुथरा खाना अपने बच्चों को तो माँ ही दे सकती है। स्कूल के लापरवाहों को इस की क्या परवाह। जहाँ तक तालीमी मेयार का मसला है अगर वहां अच्छी तालीम मिलती तो उनसे ज़्यादा तादाद में इंग्लिश मीडियम स्कूल बन्द हो जाते। दुनियावी तालीम दो तरह की होती है, एक तो वह जो ज़रूरियाते ज़िन्दगी में मदद करते हैं जैसे हिसाब और समाजी उलूम, दूसरे वह जिनसे रोटी का मामला हल होता है, जो कम से कम बी0ए0 करके ट्रेनिंग वगैरह की जाऐ इसमें जो मुश्किलात है सब पर ज़ाहिर हैं, इससे बेहतर है कि बिज़नेस, इंजीनियरिंग, मेडिकल वगैरह की तालीम हासिल की जाए अगर्चे इसमें सिर्फ़ दौलत वाले ही हाथ डाल सकते हैं, जहाँ तक कॉलेजों में सिक्रेट्रीएट में और सरकारी महकमों में क्लर्की हासिल करना है तो आप फर्स्ट डिवीज़न में बी0ए0, एम0ए0 करने पर भी नहीं पा सकते, सिवाय इसके कि किसी मंत्री, एम0पी0, एम0एल0ए0 के क़रीबी रिश्तेदार हों, लिहाज़ा वह मुसलमान जो एम0बी0ए0, बी0यू0एम0एस0, और इंजीनियरिंग हासिल करने की दौलत नहीं रखते उनको चाहिए कि अपने लड़कों को कारपेन्ट्री, लुहारी, टेलरिंग, एअरकन्डीशन जैसी कोई सनअत सिखाएं, जिस से वह नौकरी के बिना अपना काम करके हलाल रोज़ी कमा सकें या तिजारत में लगें।

शेष पृष्ठ.....16 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मस्जिदे नबवी की तामीर (निर्माण)-

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी के सामने की ज़मीन को ख़रीद कर उसमें मस्जिद की तामीर फ़रमाई, यह ज़मीन दो यतीम बच्चों की थी, उन्होंने मस्जिद का नाम सुनकर हदया (भेंट) करना चाहा, लेकिन आप ने बगैर कीमत के लेना पसन्द नहीं किया और उसकी पूरी कीमत अदा फ़रमाई, और मस्जिद की तामीर के काम में बराबर शरीक भी रहे, यह मस्जिद "मस्जिदे नबवी" कहलाई[1] जो मदीने की बड़ी और अस्ल मस्जिद बनी।

अल्लाह तआला ने आपको यह इज्ज़त अता फ़रमाई कि आप की यह बनाई हुई मस्जिद अल्लाह के नज़दीक ऐसी मुबारक करार पाई की वहां नमाज़ अदा करने पर दूसरी आम मस्जिदों के मुकाबले में पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर सवाब मुकर्रर फ़रमा दिया गया, इसी मस्जिद के दक्षिण और पूरब में करीब ही आपने अपनी अजवाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) के लिए हुजरे बनवाये[2]। इस तरह आपकी क़यामगाह (निवास स्थान) मस्जिद से करीब बन गई, फिर आपकी वफ़ात के मौक़े पर इसी मस्जिद के क़रीब आपकी ज़ौज—ए—मुतहरा हज़रत आइशा के हुजरे में जहां आपकी वफ़ात हुई आपकी आरामगाह भी बनी, इस तरह इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के मौके से आपको सलाम पेश करने और इज़हार—ए—मुहब्बत व तअल्लुक़ का एक ज़रिया बन गया, चुनांचे जो भी हज कने जाता है उस मस्जिद में भी हाज़िरी देता है, उस मस्जिद का वह हिस्सा जो आपकी आरामगाह से क़रीब मस्जिद के मिम्बर तक वाक़े है, जन्नत की क्यारियों में एक क्यारी क़रार दे दिया गया, जिसमें नमाज़ पढ़ना जन्नत में नमाज़ पढ़ने की तरह है।

मदीने में आपकी तशरीफ़ आवरी तक वहां की आबादी की बड़ी तादाद आपकी मानने वाली बन चुकी थी, और वहां के अस्ल बाशिन्दों की तरफ से वादा भी हो गया था कि वह आपकी हिफ़ाज़त भी करेंगे और आपकी रहनुमाई (मार्ग दर्शन) में अपनी ज़िन्दगी इस्लामी ज़िन्दगी बनायेंगे। इस तरह आपकी दावते हक़ का दूसरा मरहला (चरण) शुरु हुआ, जिसका शरफ़ (सम्मान) यसरिब नामी शहर को मिला, यसरिब असलन शहर के एक हिस्से का नाम था, जो आहिस्ता—आहिस्ता पूरे शहर के लिए इस्तेमाल होने लगा, इस लफ़्ज़ में एक बुरा पहलू था, आपने उस लफ़्ज़ के बजाए दूसरे अल्फ़ाज़ से उसका अदा करना पसन्द फ़रमाया और

1. सीरत इब्ने हिशाम 1/496, तबक़ात इब्ने सअ़द 1/239, जादुल मआद 3/62।
2. तबक़ात इब्ने सअ़द 1/239

उस वक्त से वह "तैबा–ताबा" और आपकी निस्बत (सम्बन्ध) से "मदीनतुन्नबी" के नाम से मौसूम (नामित) होने लगा और "मदीनतुन्नबी" के इख़्तिसार (संक्षिप्त) की बिना पर "अल–मदीना" कहा जाने लगा[1]।

यह इज़्ज़त व शरफ़ (सम्मान) का एक मौका आया था कि शायद "ताएफ" के शहर को हासिल हो जाता अगर वहां के ज़िम्मेदारान इस दअवत की अज़मत (महानता) को समझते और उसकी मदद के लिए अपने को पेश कर देते और आपको यहां बुला लेते, इस दअवते हक़ के रहबर (नायक) ने उन लोगों के सामने तकलीफ़देह सफ़र करके मदद लेने की बात रखी थी, लेकिन उस शहर की क़िस्मत में यह बुलन्द मक़ाम न था, उन्होंने अपनी ज़िद व अपनी हटधर्मी की वजह से अपने को इस शरफ़ (सम्मान) व इज़्ज़त से महरूम (वंचित) कर लिया, जो हक़ीक़त में खुदा की तरफ़ से ही उसके मुकद्दर में नहीं थी।

आख़िर में उसी के तीन साल बाद वह शरफ़ व इज़्ज़त "यसरिब" अर्थात मदीने को अता हुई जहां के लागों ने उसकी पेशकश (आफ़र) पर लब्बैक कहा और उसकी नुसरत (मदद) के लिए जान व दिल से तत्पर हो गए और इस तरह "यसरिब" का शहर अल–मदीनतुल मुनव्वरह (अर्थात वह शहर जो नूर से रौशन हुआ) बन गया और अल्लाह तआला के आख़िरी नबी का ठिकाना और मुक़ाम बन गया, जिसमें आपको मज़बूत हिमायतियों के बीच रहते हुए इस्लाम की दअवत फैलाने का मौक़ा मिला, और दअ़वते इस्लाम का यह मरहला (चरण) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबूवत मिलने और उसके तहत दअ़वत हक़ देने में सख़्त से सख़्त दुश्वारियों और ज़हमतों (कठिनाईयों) में 13 साल की मुद्दत (समय) गुज़ारने के बाद शुरु हुआ।

इस तब्दीली के ज़रिये आपको आपके सम्मानित साथियों को दीन–ए–हक़ की दअ़वत के शुरु करने वाले मुक़ाम शहरे मक्का के लोगों की दुश्मनी और कष्टदायक हालात से बचाव का मौक़ा भी मिला और मुसलमानों को यहां भाईचारे और मदद का माहौल हासिल हो जाने से दीने हक़ की तब्लीग़ व इशाअत (प्रचार) की ज़िम्मेदारी की अन्जामदेही का फ़रीज़ा (कर्तव्य) ज़्यादा मुनज़्ज़म (संगठित) और ज़्यादा तवज्जुह (ध्यान) से अन्जाम देने का भरपूर मौका मिला, अलबत्ता इस मरहले में इन्फिरादी (व्यक्तिगत) दुश्मनी और तकलीफ़ पहुंचाने की जगह पर इजतिमाई (सामूहिक) और संगठित स्तर की दुश्मनी से साबिक़ा पड़ा।

मदीने की प्राकृतिक और भौगोलिक स्थिति- मदीना मुनव्वरह अपनी जगह के ऐतबार से ख़ास अहमियत रखता था, वह मक्का मुकर्रमा से लगभग साढ़े चार सौ कि0मी0 उत्तर में वाक़ै (स्थित) था, उसके इर्द गिर्द पहाड़ियों का सिलसिला था, पश्चिमी दिशा के पहाड़ों की दूसरी ओर थोड़े फ़ासले पर समुद्र था, समुद्र और पहाड़ की

1. अलमुफस्सल फ़ी तारीखिल अरब क़बलल इस्लाम, 4/130

बीच बराबर जगह थी, जो अपनी जगह के लिहाज़ से "तिहामा" का हिस्सा थी, दक्षिण ओर से आने वाले काफिले उसी में गुज़र कर शाम, मिस्र और तुर्की जाते थे, यह रास्ता मदीने से क़रीब होने की बिना पर एक तरह से मदीने वालों के अधीन (मातहत) था। मदीना शहर अपने पूर्वी दिशा के लिहाज़ से पहाड़ी सिलसिला यह रास्ता जिसे "हिजाज़" कहते हैं के पश्चिमी किनारे वाक़ै (स्थापित) है और उसकी ज़मीन पैदावारी सलाहियत रखती है, चुनांचे उसमें खेती–बाड़ी होती रही है, खजूर व अंगूर के बाग़ात भी होते हैं, इसकी वजह से यहां के बाशिन्दे (निवासी) आम तौर पर किसान और ज़मीनदार होते थे और यह बात मक्के के विपरीत थी, जहां कि ज़मीन खुश्क थी वहां के लोग तिजारत पेशा होते थे और उसके लिए उनको कभी माल के साथ यमन जाना पड़ता था, कभी शाम, और शाम जाने में मदीने के क़रीब से गुज़रना होता था, चुनांचे अरब द्वीप के आस–पास के इलाकों में यहां के लोगों की यह अहमियत समझी जाती थी कि वह अगर नाराज़ हों तो तिजारती रास्तों पर रूकावट का सबब बन सकते हैं, ख़ास तौर पर कुरैश के लिए जो कि तिजारती पेशा वाले थे, अपने शाम जाने वाले रास्ते के मदीने के करीब से गुज़रने की नज़ाकत (बारीकी) को समझते थे, इसके साथ–साथ मदीने के रहने वाले कबीले "औस" व ख़ज़रज अरबों की कहतानी नस्ल थे, जबकि कुरैशी और उनके दोस्त व क़राबत वाले इस्माईली नस्ल के क़बीलों से थे, इस क़बाइली फ़र्क से भी दोनों के बीच एक हद तक अलग–अलग ज़हन और अपने–अपने क़बीले की नस्ली असबियत (पक्षपात) भी पाई जाती थी।

सामूहिक स्थिति– मदीने का यह शहर यहां के लोगों के मुसलमान होने और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यहां आमद से पहले दूसरे इलाक़ों के अरब क़बाइल की आदत व दस्तूर के मुताबिक़ आपस में एहसास–ए–इज़्ज़त की ज़्यादती की बिना पर खाना जंगी (गृहयुद्ध) से गुज़र रहा था और यहां के क्षेत्रीय और स्थानीय हालात अपनी खास पेचीदगियां (उलझनें) भी रखते थे, यहां अरबों के दो क़बीले औस व ख़ज़रज थे जो वास्तव में एक ही नस्ल (वंश) से थे, आपस में क़बाइली असबियत (गौत्रीय पक्षपात) में एक दूसरे से लड़ते रहते थे, उनके साथ पड़ोस में यहूदी क़बीले भी थे जो अरब न होने की वजह से बाहरी समझे जाते थे, उनकी आबादी भी कम थी, उनमें ख़ास और बड़े ख़ानदान, बनू नज़ीर, बनू कुरैज़ा, बनू क़ीन काअ के नाम से मशहूर थे, यह वहां के मालदार लोग थे, आम तौर पर यह ज़मीनदार बन गये थे, यह अरबों को अपने बाग़ात और खेतों में मज़दूरी पर रखते और उनके ग़रीबों को सूदी क़र्ज़े देते थे और उनकी आपस की लड़ाईयों में एक पार्टी के मुकाबले में ताकत पहुंचाते थे,

शेष पृष्ठ.....26 पर

हुक़ूक़ व फराइज़

—मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उ़स्मानी

शैख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन रह0 हमारे माज़ी करीब की उन शख़्सीयतों में से थे जिनकी किताबें हर दौर में गिनी–चुनी हुआ करती हैं, उनका उर्दू तर्जुमा कुर्आन और तफ्सीर मशहूर व मारूफ है, उसके अलावा आजादी–ए–हिन्द के सिलसिले में उनकी रेशमी रूमाल तहरीक़ और खिलाफत तहरीक़ में उनकी सरगर्म खिदमात से हमारी तारीख रौशन है, वह दारुलउलूम देवबन्द के पहले तालिबे इल्म थे और तालीम पूरी करने के बाद, दारुलउलूम देवबन्द ही में उम्र भर तदरीसी खिदमात अंजाम देते रहे, यहां तक कि शैखुल हदीस के मन्सब पर फाइज़ हुए और माजी करीब के बेशुमार मशाहीर ने उनकी शागिर्दी का एज़ाज हासिल किया।

जब दारुलउलूम देवबन्द में शैखुल हदीस के तौर पर तदरीसी खिदमात अंजाम दे रहे थे तो दारुल उलूम की मजलिसे शूरा ने महसूस किया कि उनकी तन्ख्वाह उनके मन्सब, उनके इल्म व फज़्ल और उनकी खिदमात के लिहाज से बहुत कम बल्कि न होने के बराबर है, उनका कोई और आमदनी का ज़रीआ भी नहीं है और ज़रूरियात बढ़ती जा रही हैं, चुनांचे मजलिसे शूरा ने इत्तिफाके राय से फैसला किया कि मौलाना की तन्ख्वाह में इज़ाफा किया जाए और इस मजमून का एक हुक्म नामा मजलिसे शूरा की तरफ से जारी कर दिया गया।

जो साहब मौलाना के पास मजलिसे शूरा के फैसले की खबर लेकर गये उन्हें यकीनन यह उम्मीद थी कि मौलाना यह खबर सुन कर खुश होंगे लेकिन मुआमला उल्टा हुआ मौलाना यह सुन कर परेशान हो गये और फौरन मजलिसे शूरा के अरकान के नाम एक दरख्वास्त लिखी जिसका मज़मून यह था कि –

"मेरे इल्म में यह बात आई है कि दारुलउलूम की तरफ से मेरी तन्ख्वाह में इजाफा किया जा रहा है, यह इत्तिला मेरे लिए सख्त तशवीश का मौजिब है, इसलिए कि मेरे उम्र की जियादती और दूसरी मसरूफियात की वजह से अब दारुलउलूम में मेरी जिम्मेदारी, पढ़ाने के घण्टे कम किये गये हैं जब कि इससे पहले मरे जिम्मे ज़्यादा घण्टे हुआ करते थे, इसका तकाज़ा तो यह था कि मजलिसे शूरा मेरी तन्ख्वाह कम करने पर गौर करती न कि मेरी तन्ख्वाह में इजाफे पर सोचा जाए, लिहाजा मेरी दरख़्वास्त है कि मेरी तन्ख्वाह बढ़ाने का फैसला वापस लिया जाए और आगे के लिहाज से तन्ख्वाह कम करने पर गौर किया जाए"।

आज हम जिस माहौल में जी रहे हैं इस में अगर कोई मुलाज़िम इस मजमून की दरख़्वास्त अपनी इन्तिज़ामिया के नाम तहरीर

करे तो अक्सर गुमान यही होगा कि इस दरख़्वास्त के ज़रिए मुलाजिम ने अपनी इन्तिज़ामिया पर भरपूर तंज किया है, वह अपनी तन्ख़्वाह में इजाफे की मिक्दार से ना सिर्फ़ यह कि मुतमइन नहीं है बल्कि उसे इन्तिज़ामिया पर यह संगीन ऐतेराज़ है कि उसने यह मामूली इजाफा करके उसकी तौहीन की है। लिहाजा उसने जले–कटे लहजे में यह तंज आमेज़ खत तहरीर किया है।

लेकिन हज़रत शैखुल हिन्द ने जो दरख़्वास्त लिखी थी उसमें दूर–दूर तंज का कोई शाइबा नहीं था, वह वाकिअतन यह समझते थे कि तन्ख़्वाह में जो इज़ाफा होगा शायद वह उनके काम के लिहाज से दयानतन दुरुस्त न हो, इसलिए कि उस माहौल में ऐसे हज़रात की अच्छी–खासी तादाद थी जो अपने तदरीसी अवकात के एक–एक मिनट का हिसाब रखते थे यह उनका बिका हुआ वक्त है जो किसी और काम में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी ने थाना भवन (जिला मुजफ़्फरनगर) में जो मदरसा काइम किया था उसमें हर उस्ताद का मामूल था कि अगर उन्हें मदरसे के औक़ात में अपना कोई ज़रूरी ज़ाती काम पेश आ जाता या मुलाजमत के औक़ात में उनके पास कोई जाती मेहमान मिलने के लिए आ जाता तो घड़ी देख कर अपने पास नोट कर लिया करते थे कि इतना वक्त अपने ज़ाती काम में सर्फ हुआ और महीने के ख़त्म पर उनके अवक़ात का मजमूआ बना कर इन्तिज़ामिया को खुद से दरख़्वास्त पेश करते थे कि इस माह हमारी तन्ख़्वाह से इतने रूपये काट लिये जाएं क्योंकि इतना वक़्त हमने दूसरे काम में ख़र्च किया है। यह है उस फर्ज़ शनास मुआशरे की एक हल्की सी तस्वीर जो इस्लाम पैदा करना चाहता है।

आज हमारे मुआशरे में हर तरफ हुकूक हासिल करने की सदाएं गूंज रही हैं, इस मकसद के तहत बेशुमार इदारे, अंजुमनें और जमाअतें काइम हैं और हर शख़्स अपने हुकूक के नाम पर ज़्यादा से ज़्यादा मफादात हासिल करने की फिक्र में लगा है, लेकिन इस पहल की तरफ तवज्जुह बहुत कम लोगों को होती है कि इन्सान के हकूक हमेशा उसके फराइज़ से वाबस्ता होते हैं बल्कि दरहकीकत उन्हीं से पैदा होते हैं और जो शख़्स अपने फराइज का हक़ अदा न कर सके उसके लिए अपने मुतअल्लका हुकूक के मुतालबे का कोई जवाज़ नहीं है।

इस्लामी तालीमात का मिजाज़ यह है कि वह न सिर्फ हर फर्द को अपने फराइज की अदाएगी की तरफ मुतवज्जुह करती है बल्कि दिलों में असल फिक्र ये पैदा करती है कि कहीं मुझसे फराइज़ की अदायगी में कोई कोताही तो नहीं हो रही है? इसलिए हो सकता है मैं अपनी तरकीबों से उस कोताही को दुनिया में छुपा लूँ और उसके दुनियावी नताइज से महफूज हो जाऊं,

लेकिन जाहिर है कि कोई कोताही ख़्वाह वह कितनी मामूली क्यों न हो अल्लाह तआला से नहीं छुपा सकता।

जब यह फिक्र किसी शख्स में पैदा हो जाती है तो उसका अस्ल मसलआ हुकूक के हुसूल के बजाए फराइज की अदाएगी बन जाता है कि वह अपने जाइज़ हुकूक़ भी फूंक–फूंक कर वसूल करता है कि कहीं वसूल शुदा हक का वजन अदा करदा फरीज़े से ज़्यादा न हो जाए, यही फिक्र थी जिसने शैखुल हिन्द को वह दरख़्वास्त देने पर मजबूर किया था।

अगर यह फिक्र मुआशरे में आम हो जाए तो सब के हुकूक खुद से अदा होने शुरु हो जाएं और हकतलाफियों की शरह घटती चली जाए, इसलिए कि एक शख्स का फरीज़ा दूसरे का हक है और जब पहला शख्स अपना फरीज़ा अदा करेगा तो दूसरे का हक खुद से अदा हो जाएगा। शौहर अपने फराइज अदा करे तो बीवी के हुकूक अदा होंगे, बीवी अपने फराइज अदा करे तो शौहर के हुकूक अदा होंगे, ऑफिसर अपने फराइज़ बजा लाए तो मातहत को उसके हुकूक मिलेंगे और मातहत अपने फराइज बजा लाए तो ऑफिसर को उसके हुकूक मिलेंगें, गरज दो तरफा तअल्लुकात की खुशगवारी का अस्ल राज यही है कि हर फर्द अपनी जिम्मेदारी महसूस करके उसे ठीक–ठीक अदा कर रहा हो तो दोनों में से किसी को हकतल्फी की कोई जाइज शिकायत पैदा नहीं हो सकती।

लेकिन यह फिक्र मुआशरे में उस वक्त तक आम नहीं हो सकती जब तक उसमें फिक्रे आखिरत की आबयारी न की जाए। आज हम अकीद–ए–आखिरत पर ईमान रखने का ज़बान से चाहे जितना एलान करते हों लेकिन हमारी अमली ज़िन्दगी में इस अकीदे को कोई परतौ उमूमन नज़र नहीं आता, हमारी सारी दौड़–धूप का महवर यह है कि रूपये पैसा और माल व अस्बाब कि गिनती में इजाफा किस तरह हो? यही बात ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद बन चुकी है।

चुनांचि अगर हम कहीं मुलाजमत कर रहे हैं तो हमारी सोच का बुनियादी नुक्ता यह है कि अपनी तन्ख़्वाह और अपने ग्रेड में इजाफा किस तरह किया जाए? और मुलाजिम को हासिल होने वाली दूसरी सहूलतें ज़्यादा से ज़्यादा किस तरह हासिल की जा सकती हैं? उसके लिए हम इनफिरादी दरख़्वास्तों को लेकर इजतिमाई सौदाकारी और चापलूसी से लेकर घूस, धांधली तक हर हरबा इस्तेमाल करने के लिए तैयार हैं, लेकिन हममें यह फिक्र रखने वाले बहुत कम हैं कि जो मिल रहा है वह हमारी कारकर्दगी के लिहाज से हलाल भी है की नहीं? जब अपने लिए कुछ वसूल करने का वक्त आए तो हमें यह हदीसे नबवी खूब याद होती है "मजदूर की मजदूरी उसका पसीना खुश्क होने से पहले अदा कर दो" लेकिन यह देखने की ज़रूरत हममें से बहुत कम लोग महसूस करते हैं कि पसीना वाकई निकला भी है की नहीं?

इस सूरते हाल की वजह यह है कि हम अपने हुकूक के मुआमले में तो बहुत हस्सास हैं लेकिन फराइज़ के मुआमले में हस्सास नहीं, और जब किसी भी फरीक़ को अपने फराइज की फिक्र न हो तो उसका लाज़िमी नतीजा यही होता है कि सबके हुकूक पामाल होते हैं, मुआशरे में झगड़ों, तनाजआत और मुलबों की चीख़ व पुकार के सिवा कुछ सुनाई नहीं देता, लोगों की ज़बानें खुल जाती हैं और कान बन्द हो जाते हैं और जब ज़मीर को मौत की नींद सुलाने के बाद कोई किसी की नहीं सुनता तो लोग आखिरी चार–ए–कार इसी को समझते हैं कि जिसके जो चीज़ हाथ लग जाए ले भागे। चुनांचि नौबत छीना–झपटी, लूट–खसोट तक पहुंच कर रहती है।

अपने गिर्द व पेश में नजर दौड़ा कर देखें तो यही मंजर दिखाई देगा, इससे परेशान हर शख्स है, लेकिन अफरा–तफरी के इस आलम में यह सोचने–समझने की फुरसत बहुत कम लोगों को है कि यह सूरते हाल उस वक्त तक तब्दील नहीं होगी जब तक हममें से हर शख्स फराइज़ को मुकद्दम करने या कम से कम फराइज़ को इतनी अहमियत तो दे जितनी अपने हुकूक को देता है, इसलिए इस सिलसिले में आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक और इरशादे गरामी हमारे लिए बेहतरीन रहनुमाई फराहम करता है, बशर्ते कि हम उस पर अमल के लिए तैयार हों, इरशाद है "अपने भाई के लिए भी वही पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते हो और अपने भाई के लिए भी उस बात को बुरा समझो जिसे अपने लिए बुरा समझते हो"।

इस हदीस मुबारक ने हमें यह सुनहरा उसूल बताया है कि जब भी किसी दूसरे शख्स से कोई मुआमला करने की नौबत आए तो पहले अपने आपको उस दूसरे शख्स की जगह खड़ा करके देख लो कि मैं अगर इस जगह होता तो किस–किस से मुआमले की तवक्को करता, कौन सी बात मेरे लिए ना गवारी का मोजिब होती? और किस बात से मुझे इत्मिनान होता? बस अब दूसरे शख्स के साथ वही बरताव करो जो उस वक्त तुम्हारे लिए मोजिबे इत्मिनान हो सकता है और हर उस बात से परहेज करो जो तुम्हें ना गवार हो सकती थी। अगर एक ऑफिसर अपने मातहत के साथ अपने साथ मुतअय्यन करते वक्त यह मेयार अपना ले कि अगर मैं उसकी जगह होता तो किस किस्म के खर्चे को इन्साफ के मुताबिक समझता? तो उसके मातहत को कभी उससे कोई शिकायत पैदा नहीं हो सकती, इसी तरह अगर मातहत अपने काम की नीयत मिक्दार मुतअय्यन करते वक्त इस बात को फैसला कुन करार दे कि अगर मैं अपने अफसर की जगह होता तो मैं इन्साफ के साथ कितने और कैसे काम की तवक्को करता? तो अफसर को अपने मातहत से कोई शिकायत नहीं हो सकती। यह उसूल सिर्फ मातहत और अफसर ही के साथ नहीं बल्कि दुनिया के

शेष पृष्ठ.....16 पर

आइये हम सब मिलकर शादियों को आसान बनाएं

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

अगर किसी मुहल्ले में ऐसा शख्स हो जो खुद अपने घर में आग लगा दे और फिर अपने घर को जलता देख कर खुश हो या अपने हाथों से अपने घर के दर व दीवार गिरा दे और ऐसे मौके पर लोगों को इकट्ठा करे और उनको यह तमाशा दिखाए तो मुहल्ले के दूसरे लोग ऐसे शख्स को क्या कहेंगे, सब ही यह समझेंगे कि ऐसा शख्स जो इस तरह की हरकत करे उसके दिमाग़ में कुछ फुतूर है और उसकी अक़्ल सही—सालिम नहीं, वरना अपने हाथों से अपने घर को न जलाता और उसके दर व दीवार को न गिराता। लेकिन आज हमारे समाज में इस तरह के बे शुमार वाक़िआत पेश आ रहे हैं और सिर्फ यह नहीं कि घर जलता हो बल्कि घरों की तबाही के साथ इज्जत व शराफत पर भी बट्टा लगता है, दौलत व सरवत का खातिमा होता है।

आपके दिल में यह सवाल पैदा हो रहा होगा कि आखिर वह कौन सा नासूर है जो जिस्म को घुला देता है, और वह वाकिआत क्या हैं जो घरानों के घराने तबाही के ग़ार में ढकेल देते हैं। हमने इस्लाम के दामन को छोड़ कर और उसके साय—ए—आतिफत से निकल कर रस्म व रवाज में फंस कर अपने अक्ल व जमीर को भी खैरबाद कह दिया है, जिसका नतीजा यह हुआ कि सारी ज़िन्दगी रस्म व रवाज, नुमाइश, नाम व नमूद और एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश में उलझ कर रह गई। आज हमारे घरानों में शादी किस तरह होती है, उसके लिए क्या— क्या करना होता है, हजारों रस्मों से गुजरना होता है, शादी जो एक खुश कर देने वाली चीज़ होती है उसका नतीजा क्या होता है?

1. कितने ऐसे मिलेंगे जो शादी पर लाखों रूपये खर्च करते हैं जब कि उतनी हैसियत नहीं होती मगर कर्ज लेकर फुजूल रस्मों पर पानी की तरह दौलत बहाते हैं।

2. कितने ऐसे होते हैं जो अपना मकान तक रेहन रख कर उस खर्च को पूरा करते हैं और फिर अपने मकान को वापस नहीं ले पाते।

3. कितने ऐसे हैं जो सूदी रूपया कर्ज लेकर शादी धूम —धाम से करते हैं।

4. कितने ऐसे हैं जो रूपया इकट्ठा न कर पाने की वजह से अपनी जवान लड़कियों की शादी नहीं कर पाते और लड़कियाँ घर में बैठी रह जाती हैं। आप खुद सवाल कीजिए कि क्या लोगों को दिखाने और नाम व नमूद की खातिर अपने को तबाह कर लेना अक्लमन्दी का काम है? दुनिया की तबाही के साथ आखिरत को तबाह कर लेना समझ—बूझ की बात है? हमारा फरीजा है कि ऐसी तबाह

कुन शादियों के खिलाफ तहरीक (आन्दोलन) चलाएं, उन लोगों को समझायें जो इन रस्मों के अदा न कर सकने की वजह से आम लड़कियों की शादी नहीं करते, आइये हम सब मिलकर शादियों को इतनी आसान बनाएं कि अमीर व गरीब बिना किसी बोझ के शादी कर सके।

❖❖❖

इल्म और मुसलमान.....

मेरी जानकारी में जहाँ मुसलमान हैं वहां दीनी मराकिज़ भी हैं जो नाबालिगों को ज़रूरियाते दुनिया भी सिखाते हैं और ज़रूरियाते दीन भी। अब यह उनकी ज़िम्मेदारी है कि वह बालिग़ होने पर ज़रूरियाते दीन के फ़र्ज़ इल्म व अदब को बाक़ी रखें। अल्हम्दुलिल्लाह दीनी मदारिस (दारुल उलूम वगैरह) दीन के फर्ज़े किफाया वाला इल्म देकर उम्मत को सुबुकदोश कर रहे हैं, अल्लाह इन दीनी मकातिब व मदारिस को बाकी रखे। आमीन!

❖❖❖

हुकूक व फराइज़.....

हर तअल्लुक में उतना ही मुफीद और कारआमद है, बाप–बेटे, भाई–बहन, मियां–बीवी, सास–बहू, दोस्त–अहबाब अजीज व रिश्तेदार, ताजिर और खरीदार, हुकूमत और अवाम गरज़ हर किस्म के बाहमी रिश्तों में खराबी यहां से पैदा होती है। लोगों ने ज़िन्दगी गुजारने के लिए दोहरे मेयार अपना लिए हैं, अपने लिए हम किसी और मेयार की तवक्को रखते हैं और इसी की बुनियाद पर दूसरों से मुतालबे करते हैं, और दूसरों के लिए हमने कोई और मेयार बना रखा है और उनके साथ मुआमला उसी मेयार के मुताबिक करते हैं, अगर हमारे लेने और देने के पैमाने अलग–अलग न हों बल्कि दोनों सूरतों में हमारी सोच एक जैसी ही हो तो हकतलाफी का सवाल ही पैदा नहीं हो, लिहाजा हमारा अस्ल मसअला यह है कि लोगों में फराइज का एहसास किस तरह पैदा किया जाए? यह दुरुस्त है कि कोई एक शख्स तने तन्हा मुआशरे के मिजाज को एक दम नहीं बदल सकता लेकिन वह खुद अपने मिजाज को ज़रूर तब्दील कर सकता है और अपने हल्क–ए–असर में इस मिजाज को फरोग़ देने की मुमकिन तदबीरें भी इख्तियार कर सकता है, कम से कम अपनी औलाद और अपने मातहतों में फर्ज़शिनासी का जज़्बा पैदा करने की कोशिश भी कर सकता है और अगर वह ऐसा करे तो कम से कम एक घराने को भटकने से बचा कर सीधे रास्ते पर लाने का कारनामा उसके नाम–ए–आमाल के लिए काफी हो सकता है। फिर जरिया यह है कि नेक नीयती से अंजाम दिया हुआ यह कारनामा दूसरे पर भी अपने असरात छोड़ता है और अगर यह सिलसिला जारी रहे तो इसी तरह रफ्ता–रफ्ता फर्द से घराने, घराने से ख़ानदान, ख़ानदान से बिरादरी, बिरादरी से पूरी क़ौम तअमीर व तरक्की की राह पर लग जाती है, कौमें हमेशा इसी तरह बनती हैं और आज भी उसके बनने का यही तरीक़ा है।

❑❑

मदरसों के छात्रों से कुछ बातें

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी —अनु0 नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

हम को मदरसे में अल्लाह ने पहुँचाया है-

अल्लाह ने आपको यहां भेजा है, आपको ग़ौर करना चाहिए कि हम कहां से आए, कहां थे, क्या कर रहे थे, क्या सुन रहे थे, और कहां पहुंच गए। कोई खेत में था, कोई घर में था, कोई दुकान में था, कोई कहीं था, और कोई दूसरे कार्यों में व्यस्त था, विभिन्न कार्यों से, विभिन्न क्षेत्रों से, विभिन्न लोगों के साथ आप कहां आए, वहां से आपको कौन लाया? यहां किसने पहुंचाया? आप यही कहेंगे अम्मा ने अब्बा ने। लेकिन वास्तविकता यही है कि अल्लाह ने पहुंचाया और उसी तरह हमारे जेहन में आ जाए कि जिसने हमें यहां पहुंचाया है, हमें उसकी मानकर चलना है, कोई कहीं जाता है काम करने या कोई किसी कारखाने में मुलाज़िम रखता है तो उसको मालिक के अनुसार चलना पड़ता है, ऐसा नहीं होता है कि उनका कानून कुछ और हो और आपका कुछ और, यदि आप ऐसा करने लगें तो आप कारखाने से निकाले जाएंगे। कारखाने वाला ये बर्दाश्त नहीं कर सकता कि कारखाने के वक्त कर्मचारी सिनेमा जाए या खेल—कूद करे अथवा दूसरी चीज़ों में दिलचस्पी लेने लगे, कहीं खेल हो रहा था आपने कारखाना छोड़ दिया और देखने चले गए या प्रोग्राम देखने लगे। कोई समय बर्बाद करे तो कारखाना मालिक खुश नहीं होगा बल्कि पहले तो वार्निंग देगा, फिर भी नहीं माने तो निकाल देगा, उसी समय सस्पेंड़ कर देगा। और कभी—कभी ऐसा होता है कि ओहदा घटा दिया जाता है। आप ऊँचे ओहदे पर थे, वेतन अच्छा था, एक दम से तनख्वाह भी कम हो गई और ओहदा भी गिर गया। कभी—कभी तो विभिन्न प्रकार से दण्ड भी दिया जाता है।

आप और हम जितने लोग भी अल्लाह के कारखाने में लाए गए हैं वह तैयार हों ताकि हम उस कारखाने से लाभ उठा सकें। देखिए! मामूली—मामूली चीज़ें हैं, साबुन बनाने का कारखाना है, साबुन की क्या हैसियत है, लेकिन साबुन इतनी ज़रूरत की चीज़ है कि इन्सान का उसके बिना गुज़ारा नहीं है। कपड़ा धोना हाथ धोना आदि। तो साबुन को ऐसा नहीं होना चाहिए कि खाल निकल जाए और उससे नुकसान पहुंचे। वह साबुन ज़्यादा अच्छा होता है जो नुक़सान न पहुंचाए। तो इसी प्रकार कारखाने में हर चीज़ बनती है। आप देखते चले जाइये, कहीं साबुन बन रहा है, कहीं बिस्कुट, कहीं लोहे गलाए जा रहे हैं, कीले बन रही हैं। देखिए! कील मामूली चीज़ है फिर भी बनाई जा रही है तो ऐसे ही अल्लाह ने इन्सान

को इन्सान बनाने के कारखान भी रखे हैं, जहां आपका अपवाइन्मेंट हुआ है। यहाँ आपको मानवता का संदेश दिया जाता है, मानवता का पाठ पढाया जाता है ताकि यहां से इन्सान बनकर निकलें और फिर इन्सान को इन्सान बनाएं और अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा बताएं कि इन्सान बनकर कैसे रहें? कैसे लोगों से आचार–व्यवहार रखें, ये सारी चीज़ें आपको यहां सिखाई जाएंगी। आपको खुदा के कारखाने में मुलाज़िम रखा गया है तो यदि आपने समय बर्बाद किया तो अल्लाह आपको सज़ा देगा। इसीलिए आपने देखा होगा कि जो यहां से विद्या प्राप्त कर निकलते हैं, दस–दस साल सीखकर, बारह–बारह साल सीखते हैं और सीखने के बाद निकलते हैं तो जिन्होंने अपना समय बर्बाद किया है और अल्लाह के कारखाने में रहकर सीखा नहीं है तो अल्लाह उनको यहां से ख़ारिज कर देता है, तब निकलने के बाद बेकार हो जाते हैं, किसी काम के नहीं रहते, चले जाइये, आज कितने बड़े–बड़े मदरसों के फारिग़ (शिक्षा प्राप्त) हैं उन बेचारों को ढूँढना भी मुश्किल हो रहा है, पहचान बदल जाती है, रंग–रूप बदल जाता है और ये इस कारण होता है कि अल्लाह के कारखाने में उन्होंने सीखा नहीं और बात मानी नहीं, अपनी मनमानी करते रहे तो अल्लाह ने निकाल दिया और कई लोगों का हाल ये होता है कि उनको पैसे तो खूब मिल रहे हैं, आप पता करिये तो मालूम होगा कि उनका वेतन एक लाख रूपया महीना है, लेकिन वह कभी कमरे में आकर कहते हैं कि दुआ कीजिए, मुझे सुकून नहीं है, दिल इतना बेचैन है और अन्दर से इतनी परेशानी है कि ये लाख रूपये भी आप ले लीजिए, लेकिन सुकून की एक गोली आप दे दीजिए।

इसमें भी मुआमला वही है कि यहां उन्होंने हासिल तो किया लेकिन जो काम करना चाहिए था वह जाकर उल्टा कर दिया, जैसे कि मुहावरा है "पढ़े फारसी बेचे तेल, ये देखो कुदरत का खेल"। पढ़ा था तो यहां मदरसे में, अरबी पढ़ी थी और धार्मिक शिक्षा प्राप्त की थी। उन्हें तो मुफ्ती बनना चाहिए था, मुहद्दिस बनना चाहिए था, वक्ता बनना चाहिए था, दाअी (इस्लाम प्रचारक) बनना चाहिए था, और अल्लाह का नेक बन्दा बनना चाहिए था, लेकिन वह क्या बन गये?

वह पैसों की थैली बन गये, वह जाकर साइकिल रिक्शा, मोटर चलाने वाले बन गये तो ज़ाहिर है कि आपने ही तो गलत किया, क्या सीखा था और क्या कर रहे हैं, जैसे कोई विशेष काम सीखे और उसको छोड़ कर दूसरे काम में लग जाए तो क्या अंजाम होगा? दर–दर की ठोकरें खाता फिरेगा, और अंततः झकमार कर इधर आएगा, नहीं आएगा तो फिर धक्के खाएगा। यही हाल मदरसों से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले लड़कों का है, ये बेचारे मारे–मारे फिर रहे हैं, चाहे जितना भी कमा रहे हों, कारखाने से वह निकाले गए हैं, अल्लाह ने उन्हें पसन्द नहीं किया। इधर–उधर के कामों

शेष पृष्ठ.....39 पर

दिल और गुर्दों की रुकावटें दूर करने वाली गाऊज़बाँ बूटी

—इदारा

तिब युनानी में गाऊज़बाँ नामी एक मशहूर बूटी है, हर युनानी हकीम सदियों से जानते–पहचानते हैं और इसे अपने मरीज़ के लिए इस्तेमाल करते हैं। यह एक अजीब व ग़रीब बूटी होती है, जिसके पत्ते देखने में गाय की ज़बान की तरह होते हैं।

हिन्दुस्तान में हिमालय और कश्मीर में गाऊज़बाँ बूटी की काश्त होती है। अरब ममालिक में यह आसानी से दस्तेयाब होती है, इसके पत्ते और फूल दवाओं में इस्तेमाल होते हैं।

गाऊज़बाँ दिल, दिमाग़, गुर्दे फेफड़े और जिगर की बारीक से बारीक खून की नलियों को भी ठीक करने में मुफीद होती है। जब यह पाँचों अंग बीमारियों में कमज़ोर हो जाते हैं तो खून, बलग़म वगैरा मिलकर खून को ख़राब कर देते हैं, जिसकी वजह से इन पाँचों अंगों की शिरयानों में खून की रुकावट पैदा हो कर यह पाँचों अंग फेल हो जाते हैं।

ख़मीरह गाऊज़बाँ, शरबते गाऊज़बाँ, अर्क़ गाऊज़बाँ, खमीरा आबरेशम जैसी मशहूर युनानी अदवियात में गाऊज़बाँ एक अहम जुज़ है, जो दिल दिमाग़, फेफड़े और गुर्दों की ख़ास दवाई है। गाऊज़बाँ किडनी फेलीयर की भी ख़ास दवाई है। गुर्दे और मसाने की बारीक से बारीक खून की नलियों में जब रुकावट पैदा होती है, गुर्दे सुकुड़ जाते हैं, और रास्ता तंग हो जाता है तो गुर्दे में खून की सप्लाई कम होने लगती है जिसकी वजह से ख़राब मवाद यानी यूरिया, यूरिक ऐसिड, पोटैशियम, सोडियम, खून के अन्दर जमा हो जाते हैं जिनको डाइलेसिस मशीन की मदद से बार–बार ज़िन्दगी भर निकालना पड़ता है।

ख़ज़ाईनुल अदविया में मुसन्निफ लिखते हैं कि "जले हुए ख़िलतों को गाऊज़बाँ पैख़ाना के रास्ते से बाहर निकाल देती है" यह खून को साफ करने वाली ज़बरदस्त बूटी है, जब गुर्दे फेल हो जाते हैं तो साथ में ब्लड प्रेशर, जिगर में वरम, दिल और फेफड़ों में पानी जमा हो जाना (ASCITIC) जैसी मुहलिक बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। गाऊज़बाँ इसके लिए मुफीद है। इसलिए सेकेन्ड्री हाईपरटेन्शन (Secondary Hypertension) और Ischaemic Nephropaty, वहम, वसवसह, जुनून, धड़कन जैसे अमराज़ में भी गाऊज़बाँ इस्तेमाल करते हैं। गाऊज़बाँ के फूल और पत्ते आसानी से मिल जाते हैं।

3 ग्राम गाऊज़बाँ के पत्ते,

शेष पृष्ठ.....22 पर

इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

महिलाओं की गवाही में असमानता

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

प्रश्न- दो महिलाओं की गवाही एक ही पुरुष के बराबर क्यों है?

उत्तर- मुस्लिम महिलाओं से सम्बन्धित पश्चिमी जगत का इस्लाम के विरुद्ध दुष्प्रचार बहुत पुराना है। खास तौर पर वह पर्दा, गवाही आदि मामलों में इस्लाम को जी भर के बदनाम करते हैं। जब कि सच्चाई इसके उलट है, गवाही से सम्बन्धित कुछ मामलों में ही दो महिलाओं की गवाही एक पुरुष के बराबर है और इसका ठोस कारण भी है।

पवित्र कुर्आन में गवाही से सम्बन्धित है-

"ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में मामला करो उधार का, एक निश्चित अवधि के लिए तो उसे लिख लिया करो..... और पुरुषों में से दो को गवाह बना लो, फिर यदि न हों दो पुरुष तो एक पुरुष और दो महिलाओं को जिनको तुम पसन्द करते हो गवाह बना लो, ताकि यदि भूल जाए एक उनमें से तो याद दिला दे उसको वह दूसरी"। (सूरः बक़रः 282)

उपर्युक्त आयत आर्थिक मामलों से सम्बन्धित है, जिसमें ये कहा जा रहा है कि कर्ज़ (ऋण) के लेन–देन में लिख लेना बेहतर है, और इस मामले में दो पुरुषों को गवाह बना लिया जाए, और यदि दो पुरुष न हों अथवा इनमें से एक योग्य न हो तो दो महिलाओं को गवाह बना लिया जाये ताकि यदि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे।

लिआन की गवाही में समानता-

लिआन का शाब्दिक अर्थ एक दूसरे पर लानत और ग़ज़बे इलाही (कोप) की बद्दुआ (श्राप) करने के हैं, और पारिभाषिक अर्थ पति–पत्नी दोनों को कुछ ख़ास क़समें देने के हैं।

जैसा कि मैंने शुरु में ही कहा कि ये असमानता कुछ मामलों में है, अन्यथा शेष स्थानों पर गवाही के मामलों में इस्लाम ने समानता स्थापित की है, जैसे लिआन के मामले में पवित्र कुर्आन कहता है:

"जो लोग अपनी पत्नियों पर व्यभिचार का आरोप लगाएं और स्वयं उनके अतिरिक्त उनके गवाह न हों तो हर एक की गवाही ये है कि पहले तो चार–चार बार अल्लाह की क़सम खायें कि बेशक वह सच्चा है और पाँचवीं बार ये कहे कि यदि वह झूठा है तो उस पर खुदा की लानत। और औरत से सज़ा को ये बात टाल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाये कि बेशक ये झूठा और पाँचवी बार यूं कहे कि यदि ये सच्चा है तो मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो"। (सूरः नूर, 6–9)

उपर्युक्त आयत से यह सिद्ध हुआ कि औरत पर ज़्यादती नहीं हुई और पुरुष–स्त्री दोनों के साथ

बराबरी का मामला किया गया। अर्थात दोनों से पाँच–पाँच बार क़सम लेकर उनके मध्य सम्बन्ध विच्छेद करा दिया गया।

क़ज़फ़ (महिला पर लांछन) के मामले में चार मर्दो की गवाही ज़रूरी–

महिला पर लांछन के मामले में तो इस्लाम ने चार मर्दों की गवाही को ज़रूरी करार दिया है, इसके बिना गवाही पूर्ण । मानी जाएगी, बल्कि यदि वह चार मर्द गवाह न ला पाया तो उसे अस्सी कोड़े मारे जाएंगे। पवित्र कुर्आन में है :–

"और जो कोई संयमी (परहेज़गार) औरतों पर बदकारी का लांछन लगाए और उस पर चार गवाह न लाए तो उसको अस्सी कोड़े मारो और कभी उसकी गवाही कुबूल न करो और यही व्यभिचारी है"। (सूरः नूर,4)

जो लोग इस्लाम पर मुस्लिम औरतों के बारे में भेदभाव का आरोप लगाते हैं वह देख लें कि यदि एकाध मामलों में दो औरतों की गवाही एक मर्द के बराबर मानी जाती है तो वहीं दूसरी ओर स्त्री की अस्मिता (सम्मान) और पवित्रता के सम्बन्ध में चार मर्दों की गवाही ज़रूरी क़रार दी जा रही है।

नवीन विज्ञान और महिलाओं की दुर्बलता–

नवीन विज्ञान के दर्पण से हम दिखाएंगे कि स्त्री दुर्बल क्यों है? HEWOLOCK AELIS जो वर्तमान में यौन सम्बन्धी विषयों का विशेषज्ञ है, पुरुष और महिला दोनों की सोचने–समझने की क्षमता को दर्शाया है। उसका कहना है कि औरतों में अक़्ल की कमी होती है, जबकि पुरुषों में प्राप्त किये हुए ज्ञान से लाभ उठाने की क्षमता अधिक होती है, वह जो सीखते हैं उसमें चिन्तन–मनन और खोज व अनुसंधान के माध्यम से बढ़ोत्तरी करते रहते हैं, उन्हें विज्ञान और प्रयोगात्मक विषयों में अधिक दिलचस्पी रहती है। उसके उलट महिलाओं में इन विषयों और दिमाग़ खपाने वाले सब्जेक्टों में आमतौर पर रुची कम होती है और वह अटल सिद्धान्तों और फार्मूलों से घबराती हैं। मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि महिलाओं की ये दुर्बलता दरअस्ल महिला–पुरुष की सृजनता में विभिन्नता का परिणाम है।

प्रसिद्ध नहलिस्ट फिलॉसफर प्रोडेन अपनी पुस्तक "अबतक –रून्ज़िाम" में लिखता है कि पुरुष के अंतर्ज्ञान के मुक़ाबले में महिला उतनी ही कमज़ोर है जिस प्रकार उसकी बौद्धिक शक्ति पुरुष के मुकाबले में कमज़ोर दिखाई देती है। यहां तक कि महिलाओं का नैतिक सिद्धान्त भी पुरुषों के नैतिक सिद्धान्त से बिल्कुल उलट है। यही कारण है कि सामन्यतः जिस चीज़ को वह अच्छा या बुरा समझती है वह पुरुषों के रायनुसार नहीं होती है। अतः पुरुष और महिला में समानता का न होना प्राकृतिक विशेषता पर आधारित है। (सुन्नते नबवी और जदीद साइंस)

साइकोलॉजी (मनोविज्ञान) और स्त्री– मानव द्वारा किसी भी ज्ञान को हासिल करने

का मुख्यालय (BRAIN) मस्तिष्क है। जब हम साइकोलॉजी के प्रयोगों के दृष्टिकोण से देखते हैं तो उसमें भी औरत कमज़ोर दिखाई देती है। साइकोलॉजी ने ये सिद्ध कर दिया है कि महिला के मस्तिष्क और पुरुष के मस्तिष्क में हर तरह से विभिन्नता पाई जाती है। पुरुष के मस्तिष्क में महिला के मस्तिष्क से अधिक सोड्राम पाया जाता है। इसके अतिरिक्त स्त्री के मस्तिष्क में जटीलता (COMPLEXITY) बहुत कम है और उसके पर्दों का सिस्टम भी सम्पूर्ण नहीं हैं।

महिला-पुरुष की बनावट में विभिन्नता– डॉ लेम्बरस (Lambras) अपनी पुस्तक स्पिरिट ऑफ इफेमिनेशन (Sprit of effamination) में लिखती हैं कि "महिला और पुरुष केवल लम्बा–चौड़ाई, हड्डियों की बनावट और मांसपेशियों के लिहाज से ही नहीं, बल्कि हर प्रकार से अलग हैं। महिलाएं पुरूषों की तरह हवा और आहार ग्रहण नहीं करतीं। उनकी बीमारियों की क़िसमें भी अलग–अलग हैं। यहां तक कि उनके नैतिक जेहनी रुझान (SENSE) में भी अन्तर पाया जाता है। विकास और प्रगति केवल इसी दशा में सम्भव है कि महिलाओं और पुरुषों के सामाजिक अधिकार व कर्तव्य के निर्धारण में उनके अन्तर और विभिन्नता को सामने रखा जाए"।

उन्नीसवीं सदी के इन्साइकलोपीडिया का लेखक "स्त्री" शब्द पर बहस करते हुए लिखता है कि औरत के कद की औसत लम्बाई मर्द की औसत लम्बाई से बारह सेंटीमीटर कम है, और ये अन्तर किसी विशेष देश, समुदाय अथवा कबीले से सम्बन्धित नहीं बल्कि समस्त मानव समाज के बीच का है।

जिस प्रकार कद के औसत में अन्तर पाया जाता है, उसी प्रकार जिस्म के वज़न और भारीपन में भी अन्तर पाया जाता है। पुरुष के शरीर का औसत भार 47 किलो और स्त्री के शरीर का औसत भार 42 किलो है।

इस प्रकार ये बात मन में उतार लेनी चाहिए कि जो पुरुष–महिला में असमानता है वह मानव निर्मित नहीं बल्कि उस अल्लाह द्वारा रचित है जिसने समस्त सृष्टि की रचना की। अतः इस्लाम में पुरुष महिला में जो अन्तर निर्धारित किया है वह निराधार नहीं बल्कि वास्तविकता पर आधारित है।

❖❖❖

दिल और गुर्दे की .....

3 ग्राम गाऊज़बाँ के फूल, 4 ग्राम कासनी के पत्तों का सफूफ तीनों को मिला कर एक कप पानी में उबाल कर दिन में दो बार इस्तेमाल करने से किडनी फेलियर में बहुत फायदा होता है। मरीज़ Tranplantation और Dialysis से बच जाता है।

<u>नोटः</u> जब कोई मरज़ अपने आख़िरी दौर में आ जाता है तो उस वक़्त कोई दवा काम नहीं करती, इस बात को याद रखना चाहिए।

❖❖❖

तंत्र–मंत्र और मीडिया

–सी0 के0 रहमानी

भविष्य के प्रति आदमी हमेशा से चिंतित रहा है, मगर आजकल कुछ ज़्यादा ही चिंताग्रस्त है। चिंता से मुक्ति के तमाम उपाय किये गये हैं। आजकल भविष्य संवारने और चिंता से मुक्ति के उपाय ज्योतिष और तंत्र--मंत्र में ढूंढ़े और बताये जा रहे हैं। इसे अंधविश्वास की इंतिहा ही कहेंगे कि बहुतेरे लोग सुबह अख़बार में भविष्यफल ज़रूर देखते हैं। यह हाल तब है जब उसे मालूम है कि भविष्य फल सही नहीं है, इसके बावजूद वह मन की तसल्ली के लिए देख ज़रूर लेता है। इसलिए बाबाओं की बढ़ती मांग को देखते हुए शायद ही एकाध चैनल ऐसा हो जिस पर भविष्य फल दिखायी न देते हों।

कुछ ही अख़बार ऐसे होंगे जिनमें भविष्य फल न छपता हो, यानी ज्योतिष और तंत्र–मंत्र को मीडिया भी ख़ूब बढ़ावा दे रहा है। कहीं विज्ञापन पाने की लालच में तो कहीं टी0आर0पी0 बढ़ाने के चक्कर में प्रसारित–प्रचारित किया जा रहा है।

दुनिया में जितनी भी समस्याएं हैं उनका निदान कहीं हो न हो जयोतिष/तंत्र–मंत्र में होने का दावा किया जाता है। पढ़ने–लिखने, नौकरी करने, इंजीनियर बनने या काम–धंधा करने की कोई ज़रूरत नहीं। सब समस्याओं का समाधान ज्योतिषियों और तांत्रिकों के पास है। बीमारी में दवा का न लगना, शादी में रुकावट, नौकरी न लगना, लगकर छूट जाना, व्यापार में घाटा, शत्रु पर विजय प्राप्त करना, मुक़दमे में जीत, किसी ने कुछ कर दिया है कि पैसा आता है लेकिन घर में रुकता नहीं, गृह क्लेश, बॉस खुश नहीं हैं, घर नहीं बन पा रहा, नौकरी में तरक़्क़ी नहीं हो रही है ऐसे सैकड़ों समस्याओं का समाधान करने वाले विज्ञापनों की लंबी लिस्ट है जिसमें हर समस्या का समाधान घंटों में करने का दावा किया जाता है।

इस तरह के पम्पलेट बसों में, चौराहों पर, शौचालयों की दीवारों पर चिपके दिखायी देते हैं या फिर कोई लड़का इन्हें बांटता दिखायी देगा। अख़बारों में इस तरह के विज्ञापनों की कोई कमी नहीं होती।

एक चैनल पर एक दाढ़ी वाले बाबा रात साढ़े ग्यारह बजे 'अवतरित' होते हैं। वह इस तरह के तमाम उपाय बताते रहते हैं। काली बिल्ली को यह खिला दें, गाय को वह खिला दें, काले उड़द अमुक को दान दें, दरवाज़े पर अमुक चीज़ लटका दें, काम बन जाएगा या समस्या कम हो जाएगी। उनकी वाणी में इतना आत्मविश्वास होता है कि लगता ही नहीं कि काम पूरा नहीं होगा। इस तरह दूसरे चैनलों पर कहीं कोई महिला दिखायी देती है, तो कहीं कोई ज्योतिषचार्य। रात भर चैनलों पर 'यंत्र' बिकते दिखायी देते हैं।

यह धंधा कितना फल–

फूल रहा है इसका अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकती है कि रात ग्यारह बजे के बाद अधिकांश चैनलों का समय बाबाओं, तांत्रिकों और सिद्ध यंत्रों को बेचने वाली कंपनियों ने ख़रीद रखा है। यंत्र बेचने वाले इतने प्रभावी ढंग से बताते हैं कि उन्होंने यह यंत्र जिस दिन से ख़रीदा है उस दिन से उनका समय बदल गया है। घर में ख़ुशहाली आ गयी है, काम–धंधा चलने लग गया है। अब कोई परेशानी नहीं रही।

यहां एक सवाल यह उठता है कि जब यह पाखंड है और इनसे कोई लाभ नहीं होता तो इनके पास लोगों की भीड़ क्यों लगी रहती है? यही सवाल लोगों को चकरा देता है और वहां जाने को लालायित करता है। ऐसा नहीं है कि जो लोग इनके पास जाते हैं उन्हें इस पाखंड का पता नहीं है।

दरअस्ल जब हर तरफ़ से असफलता घेर लेती है और सब रास्ते बंद नज़र जाने लगते हैं तब यही रास्ता खुला नज़र आता है। यह रास्ता इसलिए कि इसमें मेहनत नहीं लगती और सफलता की गारंटी दी जाती है। यानी असफलता आदमी को तांत्रिकों/ज्योतिषियों के पास ले जाती है।

कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिनके पास आम लोगों से ज़्यादा पैसा है लेकिन वह और धनी होने के चक्कर में इनकी शरण में जाते हैं क्योंकि यही शार्ट कट रास्ता दिखायी देता है। यह ऐसा रास्ता नज़र आने लगता है जिसमें हर समस्या का समाधान दिखायी पड़ता है।

एक साहब ग़ाज़ियाबाद की स्लम बस्ती में रह कर लोगों के घरों में रंग पुताई का काम करते थे। उन्हें उस समय एक दिन की दिहाड़ी सौ रूपये मिलती थी। एक दिन उनके मन में बाबा बनने का ख़्याल आया और उन्होंने अपना विज्ञापन देना शुरु कर दिया। मेरी उनसे बात हुई तो पहले वह अपनी सिद्धियों की बात करने लगे लेकिन बाद में उन्होंने अपनी पूरी सच्चाई बता दी और यह भी बताया कि अब उनकी माली हालत बहुत अच्छी हो गयी है। कुछ दिन बाद पता लगा कि उन्होंने अपना ठिकाना बदल दिया है।

ज़िन्दगी के मुश्किलात से हर आदमी जूझ नहीं सकता या जूझना नहीं चाहता इसलिए वह शार्टकट रास्ता खोजता है। रही सही कसर मनमोहक विज्ञापन पूरी कर देते हैं। विज्ञापन ऐसे मनमोहक और जादुई होते हैं कि किसी भी समस्या का समाधान घंटों में करने का दावा किया जाता है। सोचता है चलो एक बार आज़मा कर देख लिया जाए। हैरत की बात यह है कि यह धंधा छोटे गांव से लेकर क़स्बों और बड़े शहरों तक में खूब फल–फूल रहा है।

अगर आप तर्क–वितर्क करते हैं तो ये लोग कह देते हैं कि उन्हीं लोगों को फ़ायदा होगा जिनको इसमें विश्वास और आस्था है। अब आपको मजबूरी में उस पर आस्था और विश्वास करना ही पड़ेगा। अगर ऐसे लोग कहीं फंसते हैं तो कह देते हैं कि हमारा काम तो ताबीज़ बनाना/पूजा

शेष पृष्ठ.....26 पर

आदर्श शासक

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

आइये मैं आपको एक और महान शासक से भेंट कराता हूँ, जो कि मदाइन नामक प्रदेश के गवर्नर हैं और जिनका नाम हज़रत हुज़ैफा बिन यमान रज़ि0 है। इन्हें हज़रत उमर रज़ि0 ने ईरान की राजधानी का गर्वनर नियुक्त किया था। जैसे हज़रत उमर रज़ि0 थे वैसे ही वह अपने शासकों–प्रशासकों से चाहते थे अर्थात जिस कर्मठता और कर्तव्यों के प्रति वह सचेत रहते तथा सादगी का उच्च प्रदर्शन करते थे वैसे अपने मातहतों से भी चाहते थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत ने सहचरों में ऐसी क्रान्ति ला दी थी कि वह दुनिया को अपनी ठोकरों में रखते और सादगी का दामन कभी हाथ से छूटने न देते।

खैर! बात हज़रत हुज़ैफा रज़ि0 की हो रही थी। जब हज़रत उमर रज़ि0 ने उन्हें मदाइन का गर्वनर नियुक्त किया और वह मदाइन की ओर चले तो जिस सादगी का उन्होंने प्रदर्शन किया वह इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है और रहती दुनिया के लिए एक मिसाल है। जब मदाइन के लोगों और सरदारों को मालूम हुआ कि वह आ रहे हैं तो वह अपने नये गवर्नर के स्वागत–सत्कार हेतु रास्ते पर खड़े हो गए और लम्बी प्रतीक्षा के बाद एक दूसरे से पूछने लगे कि भई! हमारे गवर्नर साहब कब आएंगे, लेकिन कोई बता नहीं पा रहा कि हमारे गवर्नर साहब कब आएंगे। अंततः एक आदमी ने बताया अरे! वह तो कब के जा चुके, वह देखो! जो आदमी खच्चर पर बैठा जा रहा है, वही हमारे गवर्नर साहब हैं।

लोग उनकी ओर लपके और करीब जाकर देखा की बड़े आराम से खच्चर पर बैठे हैं और खाना खा रहे हैं। मदाइन के सरदारों ने उन्हें सलाम किया तो इस्लामी अतिथि सत्कार ने उचित न समझा कि स्वयं खाते रहे, तुरन्त हाथ की रोटी और हड्डी उन्हें थमा दी। लेकिन ईरान के नाजुक मिज़ाज सरदार जौ की रोटी और बगैर लौंग मिर्च वाले गोश्त कैसे पचा पाते। मगर चूँकि गवर्नर के सामने बेअदबी न हो इसलिए लिए रहे और मौका पाते ही फेंक दिया।

अब हज़रत हुज़ैफा रज़ि0 सरकारी कार्यों की समीक्षा करने लगे और उन्हें परामर्श और आदेश देने लगे। इन सबसे निपटने के बाद ईरानी सरदारों ने हज़रत हुज़ैफा रज़ि0 से कहा, आपको किसी भी चीज़ की ज़रूरत हो तो हमें आदेश दें। हज़रत हुज़ैफा रज़ि0 ने कहा, नहीं भई! मुझे केवल पेट में डालने के लिए कुछ खाना और जानवर के लिए चारा चाहिये, इसके अतिरिक्त मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।

आज तो किसी देश के प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति या मुख्यमंत्री व राज्य के कोई

मंत्री का किसी शहर से गुज़र होता है तो इलाक़ा सील कर दिया जाता है, चप्पे–चप्पे पर पुलिस फोर्स लगा दी जाती है, सैकड़ों गाड़ियाँ उनके आगे–पीछे लगा दी जाती हैं, वह जिसमें बैठा होता है उसका दाम लाखों अथवा करोड़ों में होता है। लेकिन इस्लामी शासकों की शान तो देखो कि एक खच्चर पर बैठे चले जा रहे हैं, न किसी का डर न खौफ।

लोग कह सकते हैं कि आज तो गाड़ियों का ज़माना है, इसके बिना काम नहीं चल सकता, तो मैं कह सकता हूँ कि आज के दौर की तरह उनके दौर में भी अरबी घोड़े मशहूर थे, उसका भी इस्तेमाल कर सकते थे, या इस साइंस के दौर में ब्रिटेन की रानी की शाही बग्घी की तरह वह भी अपनी शाही सवारी निकाल सकते थे, लेकिन नहीं! अल्लाह के ख़ौफ ने और जगनायक हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत ने उनके मन से दुनिया निकाल दी थी और वह सादगी को ही सबसे उपयुक्त समझते थे। ❑❑

जगनायक.....

इससे अरब क़बीलों के आपसी टकराव में शिद्दत (उग्रता) और बढ़ जाती थी।

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 तहरीर फरमाते हैं:– "वहां का जन–जीवन मक्के की अपेक्षा अधिक पेचीदा था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा वह नाना प्रकार की थीं, क्योंकि वहां अनेक धर्म, जाति और संस्कृति के लोग रहते थे, जिन पर क़ाबू पाना और मदीना वासियों को एक अक़ीदा और एक दीन के रंग में रंगने का कठिन कार्य अल्लाह का कोई ऐसा रसूल ही कर सकता था, जिसे अल्लाह का समर्थन और ताईद प्राप्त हो तथा जिसे अल्लाह ने सूझ–बूझ दूर दृष्टि, निर्णय शक्ति और मानवता के बिखरे हुऐ ढ़ेर को एकत्र करने तथा परस्पर विरोधी शक्तियों व विचार धाराओं को सिसकती मानवता के पुनर्स्थान के काम में एक दूसरे का पूरक और मददगार बनाने की अपार क्षमता प्रदान की थी और जो एक मनमोहक व्यक्तित्व का मालिक था, कुर्आन मजीद में आता है–

"वही है जिसने अपनी मदद और मुसलमानों के ज़रिये आपकी पुश्तपनाही (रक्षा) की और उनके दिल मिला दिये कि अगर आप दुनिया की सारी दौलत भी खर्च कर देते तब भी उनके दिलों को नहीं जोड़ सकते थे, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें जोड़ और सहमति पैदा कर दी, वह ग़ालिब (सर्वशक्तिमान) और हिकमत वाला है।"

(सूरः अन्फाल 62–63

❑❑

तंत्र–मंत्र और मीडिय.....

पाठ करना/तंत्र–मंत्र करना या सिद्ध करके देना है, सिद्धि और फ़ायदा तो अल्लाह/ईश्वर/भगवान के हाथ है। यही बात सच भी है। ईश्वर ही कार्यसाधक है जो वह चाहता है, वही होता है। अतः उसी को राज़ी करने और उसी की प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

(मासिक कान्ति से गृहीत)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः आज कल मुसलमानों में यह रवाज बढ़ता जा रहा है कि मामूली बात पर या शरई सबब के बिना बीवी को तलाक़ दे दी जाती है, ऐसा करना शरअ़ में कैसा, है, इस बारे में इस्लामी शरीअ़त में क्या हिदायत है?

उत्तरः मामूली बातों पर या बिना किसी शरई सबब के तलाक़ देना इस्लामी शरअ़ में सख़्त ना पसन्दीदा है, इस तरह तलाक़ देने से अल्लाह तआला नाराज़ होते हैं और शैतान खुश होता है, इलाही अर्श कांपता है और रिवायतों में इससे रोका गया है, लिहाजा इस तरह तलाक़ देने से बचना ज़रूरी है।

(मुस्लिम 376/2)

प्रश्नः किन हालात में इस्लाम तलाक़ देने की इजाज़त देता है, अगर मियाँ–बीवी के बीच इख़्तिलाफ पैदा हो जाए और इख़्तिलाफ खत्म होने का इम्कान न हो तो इस्लामी शरीअ़त इस बारे में क्या रहनुमाई करती है? वज़ाहत से बताएं।

उत्तरः अगर मियाँ–बीवी के बीच इख़्तिलाफ़ हो जाए और ग़लती शौहर की हो तो उसे देर लगाए बिना अपना सुधार कर लेना चाहिए और शरीअ़त के बताऐ हुए हुक्मों के मुताबिक बीवी के हुकूक अदा करना चाहिए और अगर कुसूर बीवी का हो तो कुर्आन में अल्लाह तआला की हिदायत यह है कि नर्मी व मुहब्बत और हमदर्दी से बीवी को समझाए, शौहर की इताअत पर जो वादे हैं उनको बताए और ना फरमानी पर जो वईदें (चेतावनियां) हैं वह सुनाए, दोनों का अंजाम समझाए और मासूम बच्चों का अंजाम बताए, यह इस्लाह (सुधार) का पहला दर्जा है, अगर इस कोशिश से मुआमला सुधर जाए तो बहुत खूब, वरना दूसरा दर्जा यह है कि अपना बिस्तर उससे अलग कर ले, हो सकता है कि यह जाहिरी तअल्लुक़ का तर्क करना पुख्ता तअल्लुक का सबब बन जाए और औरत नाफरमानी से बाज़ आ जाए, लेकिन यह तर्के तअल्लुक का अमल सिर्फ बिस्तर की हद तक हो, मकान की जुदाई न हो ओर औरत को तन्हा मकान में न छोड़े और जो औरत इस शरीफाना तंबीह से भी मुतअस्सिर न हो इस्लाह (सुधार) की तीसरा दर्जा यह है कि उसे मामूली तौर पर मारने की इजाजत है लेकिन इस तरह न मारे, कि बदन पर असर या जख़्म हो और चेहरे पर हरगिज़ न मारे अगर इन तीनों तदबीरों से भी काम न चले और आपस का इख़्तिलाफ खत्म न हो तो अब कुर्आनी हिदायत यह है कि मर्द और औरत के खानदान में से हकम मुकर्रर हों और दोनों हकम इख़्लास और इस्लाह की नीयत से ज़ौजैन में इस्लाह (मेल) की कोशिश करें, हो सकता है

कि इस्लाह की शक्ल निकल आए, अगर यह कोशिश भी नाकाम हो जाए और रंजिश इस दर्जा बढ़ी हुई हो कि दोनों के दर्मियान निबाह मुश्किल हो जाए, बल्कि जुदाई ही में ख़ैर नजर आए तो इस सूरत में तलाक देने की इजाज़त है और तलाक़ देने में बेहतर तरीका इख़्तियार करे यानी शौहर उसे तुहर (पाकी का ज़माना) में एक तलाक़ दे, जिसमें मियाँ बीवी में मियाँ बीवी वाले तअल्लुक़ कायम न हों और इद्दत गुज़र जाए, इस्लाम में तलाक़ देने की मजकूरा सूरत दी है, मुसलमानों को इस पर अमल करना चाहिए।

(सूर–ए–निसा आयत नं0 34,35 देखें)

प्रश्नः कोई शौहर इस्लामी शरीअ़त के बताए हुए उसूल के खिलाफ बिला वजह अपनी बीवी को तलाक़ दे दे तो तलाक़ होगी या नहीं?

उत्तरः शरई सबब के बिना तलाक़ देने से अगर्चि शौहर सख़्त गुनहगार होगा लेकिन तलाक़ हो जाएगी।

प्रश्नः अगर कोई शख़्स अपनी बीवी को ऐसी हालत में तलाक़ दे जब कि बीवी हम्ल (गर्भ) से हो तो क्या तलाक़ हो जाएगी और उसकी इद्दत क्या होगी?

उत्तरः हम्ल की हालत में दी हुई तलाक़ हो जाती है और उसकी इद्दत वज़्ऐ हम्ल (यानी बच्चा पैदा होने तक) है।

प्रश्नः अगर तलाक़ देते वक़्त बीवी सामने न हो और न बीवी ने तलाक के अलफाज़ सुने तो क्या इस तरह तलाक़ हो जाती है?

उत्तरः तलाक़ के लिए औरत का सामने होना या तलाक़ के अलफाज़ सुनना ज़रूरी नहीं है, अगर शौहर ने गायबाना बीवी का नाम लेकर तलाक दे दी या नाम ना भी लिया हो हालत से पता लग रहा हो कि बीवी को तलाक़ देना मक़सूद है तो तलाक़ हो जाएगी।

प्रश्नः आजकल अखबारों में वकील के जरीये तलाक़ छापी जा रही है, क्या इस तरह तलाक़ हो जाती है?

उत्तरः तलाक़ तो अस्ल में शौहर की तरफ से होना चाहिए, लेकिन अगर शौहर तलाक़ देने के लिए अपना कोई वकील बना ले कि वह उसकी बीवी को तलाक़ दे दे और शौहर के वकील की हैसियत से उसने तलाक़ का एलान किया तो तलाक़ हो जाएगी क्यों कि वकील का तलाक देना, वकील बनाने वाले की तरफ से होता है इसलिए कि अगर्चि वास्ता वकारी का है कि तलाक़ खुद शौहर ने दी है।

(हिदाया 381/2)

प्रश्नः अगर शौहर से जबर दस्ती तलाक़ लिखवा ली जाए तो क्या लताक़ हो जाएगी?

उत्तरः अगर जबरदस्ती तलाक़ लिखवा ली जाए और ज़बान से कहलवाया न जाए तो तलाक़ न होगी।

(रद्दुलमुख़्तार– 740/4)

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सरल भाषा में लिखें।

इदारा

डॉक्टरों का नैतिक दायित्व

—डॉ0 मुहम्मद रज़ीउल इस्लाम नदवी

मेडिकल लाइन में यह मार्केट का निर्धारित नियम है कि जब एक डॉक्टर दूसरे को कोई मरीज़ रेफ़र करता है तो उसके बदले एक निर्धारित कमीशन लेता है। कई बार तो ऐसा होता है कि जो डॉक्टर ज़्यादा कमीशन दे मरीज़ उसे ही रेफ़र किये जाते हैं।

इसी तरह डॉक्टर एक निश्चित जांच घर से अपने मरीज़ का टेस्ट करवाता है, जहां से उसे निर्धारित कमीशन मिलता है, जो 40 प्रतिशत तक होता है।

दवा बनाने वाली कंपनियां भी अपनी दवाओं की बिक्री बढ़ाने के लिए डॉक्टरों को उपहार दिया करती हैं, जो छोटी–बड़ी चीज़ों से लेकर कार और विदेश यात्राओं तक हो सकते हैं। कंपनियों के पास इसके लिए निर्धारित फंड होता है। डॉक्टरों को और भी कई सुविधाएं दी जाती हैं, जिसके बदले डॉक्टरों अपने मरीज़ों को उन दवाओं का सुझाव देते हैं।

इस तरह के लेन–देन के बारे में शरीअत का क्या आदेश है।

जवाब– डॉक्टरी एक सभ्य और प्रतिष्ठित पेशा है, जनसेवा है। जो लोग इस पेशे को अपनाते हैं उन्हें समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ–साथ अल्लाह की प्रसन्नता भी प्राप्त होती है, अगर वे अपने काम के प्रति ईमानदार रहें और अल्लाह की सृष्टि को फ़ायदा पहुंचाना उनका उद्देश्य हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है "सबसे बेहतर आदमी वह है, जिससे दूसरे इन्सानों को सबसे ज़्यादा फ़ायदा हो"।

यह दुखद है कि यह प्रतिष्ठित पेशा भी उपभोक्तावाद की भेंट चढ़ गया है। दौलत कमाने की होड़ लगी हुई है। डॉक्टरों, जांच घरों, अस्पतालों और दवा बनाने वाली कंपनियों का गठजोड़ हो गया है। मरीज़ों के फ़ायदे और उसके कल्याण का मुद्दा पीछे छूट गया है और सब दौलत के ढ़ेर इकट्ठा करने में जुटे हैं।

शरीअ़त के पांच उद्देश्य बताये गये हैं– जान की सुरक्षा, माल की सुरक्षा, दीन की सुरक्षा, बुद्धि की सुरक्षा, वंश की सुरक्षा। एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जिस आदमी से सलाह ली जाए उसे अमानतदार होना चाहिए"। एक दूसरी हदीस में बताया गया है कि "न ख़ुद नुक़सान उठाया जाए और न किसी को नुक़सान पहुंचाया जाए"।

मरीज़ों को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाना ही डॉक्टरों का लक्ष्य होना चाहिए। इसके तहत डॉक्टरों, जांच घरों, अस्पतालों और दवा बनाने वाली कंपनियों का

शेष पृष्ठ.....34 पर

हिजरी, ईस्वी और विक्रमी सन्

—इदारा

हिजरी सन्— सन् वास्तव में सनतुन (सनः) है यह अरबी शब्द है जिसका अर्थ है साल (वर्ष), विक्रमी के साथ संवत लिखते—बोलते हैं, यह भी वर्ष के अर्थ में बोला जाता है।

हिजरी सन् अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत से जोड़ा जाता है, हिजरत का अर्थ है अपना निवास स्थान छोड़ कर दूसरे स्थान पर जा बसना और देश त्याग देना। जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुदेवपूजकों, अनेकेश्वरवादियों (मुशरिकों) के सामने एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा रखी और कहा "अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं है" तो मुशरिकों को यह बात बहुत बुरी लगी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी बात मानकर उनके पीछे चलने वालों (अर्थात मुसलमानों) को हर तरह से सताने लगे, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमान 13 वर्ष तक यह अत्याचार सहन करते रहे, उधर मक्के से लगभग 500 कि0मी0 दूर मदीने के बहुत से लोग मुसलमान हो गये और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना आने की दावत दी। अल्लाह ने भी यही चाहा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना चले जाने का आदेश दे दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तय्यिबा चले गये। मदीने की यह यात्रा बड़ी ही आश्चर्यजनक है, इसी को हिजरत कहते हैं, अगरचि यह यात्रा नुबुव्वत मिलने के तेरहवें वर्ष रबीउल अव्वल माह में हुई थी, परन्तु हिजरी का पहला महीना मुहर्रम माना गया है। हिजरी सन् का लिखा/बोला जाना भी हिजरत के लगभग 14 वर्ष पश्चात हज़रत उमर रज़ि0 के खिलाफत से तमाम सहाबी की राय से शुरु हुआ।

सन् हिजरी के बारहों महीने अरबों में पहले से चले आ रहे थे, जिसका संकेत क़ुर्आन में भी मिलता है। रमज़ान का महीना तो स्पष्ट रूप से क़ुर्आने मजीद में उल्लेखित है "शहरु रमजानल्लजी उन्ज़िला फ़ीहिल क़ुर्आन" (बक़रः 185) सूर—ए—बराअत में 12 महीनों के संकेत के साथ "मिन्हा अरबअतुन हुरुम" (बराअत 36)। चार मुहतरम महीनों का उल्लेख है और रिवायात में उन चारों के नाम आते हैं, हिजरी सन् के बारह महीने इस प्रकार हैं—

मुहर्रम, सफर, रबीउल अव्वल, रबीउस्सानी, जुमादल ऊला, जुमादल उखरा, रजब, शाबान, रमजान, शव्वाल, ज़ीकअ़दा, ज़िल्हिज्जा। इनमें चार महीने मुहर्रम, रजब, ज़ीकअदा और ज़िल्हिज्जा, हराम अर्थात मुहतरम (प्रतिष्ठित)

कहलाते हैं। इन महीनों में कोई मजबूरी न आ जाए तो लड़ाई–झगड़े से रोका गया है। हिजरी महीने चाँद निकलने से शुरुअ होते हैं, हर मुसलमान के लिए हिजरी महीनों की बड़ी अहमियत है, कई इबादात चांद के महीनों से जुड़ी हुई हैं, इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि चांद की हर 29 तारीख को चांद देखने की कोशिश करे ताकि चांद की सही तारीख की जानकारी रहे, चांद कभी 29 तारीख को भी दिख जाता है और वह महीना 29 का कहलाता है, चांद अगर 29 को न दिखा तो 30 को हर हाल में दिखेगा, चांद का कोई महीना न 28 दिन का हो सकता है न 31 दिन का।

चाँद के महीने की कुछ अहम (महत्वपूर्ण) बातें– मुहर्रम की पहली तारीख़ को खलीफ़ा–ए–सानी हज़रत उमर रज़ि0 की शहादत हुई थी, 27 ज़िल्हिज्जा 23 हि0 को अबू लूलू ने फज्र की नमाज में आप को जख़्मी किया और पहली मुहर्रम 24 हि0 को आप शहीद हो गये। इन्ना लिल्लाहि वइन्नाइलैहि राजिऊन। इस घटना में अबू लूलू ने सात सहाबा को भी शहीद किया था और आखिर में अपने को खंजर मार कर मार डाला था।

10 मुहर्रम को रोजा रखना मस्नून है। अच्छा यह है कि 10 के साथ 11 या 9 को भी रोज़ा रखें। सन 61 हिजरी का 10 मुहर्रम ही वह दिन है जिसमें करबला के मैदान में हज़रत हुसैन रज़ि0 को उनके 72 साथियों के साथ शहीद कर दिया गया जिसका कुछ बयान दिसम्बर 2011 के अंक में देखा जा सकता है। मुहर्रम का महीना हिज़रत के अजीब व गरीब सफर की भी याद दिलाता है।

रबीउल अव्वल का वह मुबारक महीना है जिस की 8 या 9 तारीख को अल्लाह के नबी का जन्म हुआ। तारीख़ का मतभेद इसलिए हुआ कि बाद में याद से लिखी गई।

इसी महीने की 12 तारीख को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात हुई, इसी मुनासबत से बहुत से लोग इसको बारह वफात का महीना भी कहते हैं।

जुमादुल उखरा की 22 तारीख सन् 13 हिजरी में ख़लीफ–ए–अव्वल हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की वफात हुई।

सन् 73 हिजरी में जुमादुल उखरा के महीने में ही जालिम हज्जाज ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 को शहीद किया इन्ना लिल्लाहि वइन्ना–इलैहि राजिऊन।

रजब की 22वीं तारीख़ को सन् 60 हिजरी में हज़रत मुआविया रज़ि0 की वफ़ात हुई।

शअ़बान का वह महीना है जिसकी पन्द्रहवीं रात को शबे बराअत कहते हैं और इस रात में बहुत से लोग इबादत में मशगूल रहते हैं और 15 को रोजा रखते हैं, अगर्चि कुछ लोग कहते हैं कि शबेबराअत से मुतअल्लिक रिवायतें कमजोर हैं लेकिन उम्मत के अकसर लोग रात में इबादत दिन में रोज़े का एहतिमाम करते हैं।

शअ़बान की सही तारीखों के जानने का एहतिमाम बहुत ज़रूरी है ताकि रमजान के चांद देखने का एहतिमाम हो सके।

रमज़ान वह महीना है जिसमें रोजा रखना मुसलमानों पर फर्ज़ किया गया, यही वह महीना है जिसकी 17 तारीख को पहली वहय् गारे हिरा में उतरी, यह वह महीना है जिसमें पहले आसमान पर पूरा कुर्आने मजीद उतार दिया गया, फिर हस्बे जरूरत 23 साल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया।

यही वह महीना है जिसमें एक रात ऐसी है जो हजार महीनों से बेहतर है जिसको लैलतुल क़द्र कहते हैं। इस महीने में इशा की फ़र्जों के बाद 20 रकआ़त तरावीह पढ़ना मस्नून हुआ। इसी महीने में अकसर मालदार मुसलमान अपने माल की जक़ात अदा करते हैं।

इसी माह की 18 तारीख को सन् 40 हिजरी में जहन्नमी अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम ने खलीफ–ए–चहारुम हजरत अली रज़ि0 को शहीद किया, इन्ना लिल्लाहि वइन्ना–इलैहि राजिऊन।

शव्वाल की पहली तारीख ईद का दिन है जिसको ईदुल फित्र कहते हैं। इस दिन तमाम मुसलमान खुशी मनाते हैं, नहा–धो कर अच्छे कपड़े पहनते, खुशबू लगाते, मीठा खाते, बच्चे ईदी पा कर खूब खुश होते हैं, मालदार मुसलमान सदक–ए–फित्र अदा करके गरीब मुसलमानों को भी खुशी (ईद) मनाने का मौक़ा देते हैं। फिर सब मिल कर ईदगाह जाते हैं, और वहां दो रकअत खास नमाज़ अदा करते हैं। इसी माह शव्वाल में 6 रोज़े रखने का बड़ा सवाब है लेकिन ईद के दिन रोज़ा रखना हराम है।

जिलहिज्जा का महीना बड़ा ही अहम है, जिलहिज्जा ही के महीने में हज होता है, 8 तारीख को हाजी लोग मिना जाते हैं, 9 तारीख को अरफात जाते हैं, 9 तारीख को अरफात जाए बिना हज नहीं हो सकता, 9, 10 के बीच की रात हाजियों के लिए मुजदलफा में गुजारना ज़रूरी है। 10 तारीख को जमर–ए–उक्बा (बड़े शैतान) को कंकरियां मारना, फिर अगर कुर्बानी वाला हज है तो कुर्बानी करना, फिर सर मुंडाना, नहा–धो कर आम कपड़े पहन कर हरम जा कर तवाफे ज़ियारत करना, यह काम जरूरी होते हैं। 11 और 12 तारीख को तीनों जमरात (शैतानों) को ज़वाल के बाद कंकरियां मारना ज़रूरी है। फिर वापसी से पहले तवाफ़े वदाअ़ ज़रूरी है।

10 ज़िलहिज्जा को दुनिया भर के मुसलमान कुर्बानी की ईद मनाते हैं और ईदुल फ़ित्र की तरह ईदगाह जा कर 2 रकअत नमाज़ अदा करते हैं, 10 तारीख़ से 12 तारीख़ तक मालदार लोग कुर्बानी करते हैं। 9 तारीख की फ़जर से 13 तारीख़ की अस्र तक हर नमाज़ के बाद तकबीरे तशरीक़ पढ़ते हैं। जिलहिज्जा वह महीना है जिसमें बलवाइयों ने ख़लीफ़–ए–सोम हज़रत उस्मान रज़ि0 का घर घेर रखा था, आपने पूरे महीने के घेरे की तक्लीफें सहीं मगर कल्मा पढ़ने वालों के खिलाफ़ कोई भी कारवाई करने से इन्कार कर दिया और 18 जिलहिज्जा 35 हिजरी को रोज़े की हालत में कुर्आन पढ़ते हुए शहीद हो गये। इन्ना लिल्लाहि वइन्नाइलैहि

राजिऊन।

हिजरी तारीख का जानना मुसलमान औरतों के लिए भी बहुत जरूरी है कि उनके हर माह की पाकी व नापाकी का हिसाब अल्लाह ने चांद की तारीखों ही से रखा है।

ईस्वी सन्– कहते हैं ईस्वी सन् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश से जोड़ा गया है, इसके 12 महीने यह हैं–

जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर।

ईस्वी महीने और साल का हिसाब, ज़मीन अपनी धुरी पर और सूरज के गिर्द घूमने से बनाया गया है जो बड़ा ही इल्मी है। ईस्वी सन् का साल 365 दिन का होता है और चौथे साल 366 दिन का साल होता है। ईस्वी महीनों के दिन चूँकि हिसाब से रखे जाते हैं, इसलिए उनके कुछ दिन 31 के हैं और कुछ 30 के। जब कि फरवरी 28 या 29 दिन की होती है। इसको किसी ने इस तरह समझाया है "जून नवम्बर जानिए अप्रैल सितम्बर तीस, फरवरी 28 दिन की बाकी सब इक्तीस" जो सन् चार से पूरा–पूरा तक्सीम हो जाता है उस साल फरवरी 29 दिन की होती है, बाकी सालों में 28 दिन की होती है, पूरी सदी (शताब्दी) का हिसाब अलग है।

ईस्वी महीने सूरज के हिसाब से होते हैं सब मौसमों का साथ देते हैं, बारिश, जाड़ा, गर्मी सब का हिसाब ईस्वी महीनों के मुताबिक़ होता है, फस्लों का बोया जाना, फसलों का कटना, फलों का आना, फलों का पकना, सब ईस्वी महीनों के मुताबिक रहता है इसलिए ईस्वी महीनों और तारीखों का जानना भी ज़रूरी है। रेलगाड़ियों हवाई जहाज़ों और आने जाने के लिए इन्टरनेशनल काम ईस्वी (अंग्रेज़ी) महीनों और तारीखों से होते हैं। लिहाजा हम मुसलमानों को भी हिजरी तारीखों के साथ साथ अंग्रेज़ी महीनों और तारीखों का हिसाब रखना चाहिए।

हज़रत ईसा अ0 का ज़िक्र कुर्आने मजीद में बड़े एहतिमाम से आया है, बाइबिल में तो हज़रत ईसा अ0 पर परदा डाल रखा है लेकिन कुर्आन में आपका शुद्ध परिचय दे कर कहा "ज़ालिका ईसब्नू मरयम" 'यह हैं मरयम के बेटे ईसा' हाँ! हम मुसलमान मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत हैं लेकिन ईसा अ0 भी हमारे हैं और ईसाइयों से ज़्यादा उन पर हमारा हक़ है लिहाज़ा ईस्वी महीने और तारीख़ भी हमारी हैं।

संवत विक्रमी– कहते हैं संवत विक्रमी की शुरुआत विक्रमादित्य के ज़माने से है, इसके बारह महीने यह हैं–

चैत, बैसाख, जेठ, असाढ़, सावन, भादों, कुवार, कार्तिक, अगहन, पूस, माघ और फागुन।

यह महीने भी चांद के हिसाब से हैं लेकिन हर तीन साल के बाद मास का एक महीना बढ़ा कर इसको सूरज के महीनों से जोड़ लिया है, इस तरह मौसम इन हिन्दी महीनों के हिसाब में आ जाते हैं। हिन्दी महीना बद्रे कामिल (पूर्ण मासी) के बाद शुरु होता है, इसी तरह चांद हमेशा

इनकी दो तारीख़ को निकलता है। हिन्दी का हर महीना दो पक्षों पर बाँटा गया है, पहले पक्ष को कृष्ण पक्ष कहते हैं, इसको बदी भी बोलते हैं, अंधेरा पक्ष भी बोलते हैं, दूसरा शुक्ल पक्ष कहलाता है इसको सुदी भी कहते हैं और उजाला पक्ष भी कहते हैं। इनकी तारीखें इस तरह बोली जाती हैं– पूर्ण मासी, के बाद परवा, दूज, तीज चौथ, पंचमी, छठ, सप्तमी, अष्ठमी, नौमी, दशमी, यका दशी, द्वुवा दशी, तेरस, चतुर दशी, अमावस। फिर इसी तरह परवा से गिनते हुए पन्द्रह तारीख़ की पूर्ण मासी कहते हैं। पूर्ण मासी के बाद हर तारीख़ के साथ बदी लगता है और अमावस के बाद हर तारीख़ के साथ सुदी लगता है। कभी–कभी इनका परवा और दूज एक ही दिन में हो जाता है।

पंडित लोग और हिन्दू महाजन लोग विक्रमी महीनों और तारीख़ों का बड़ा एहतिमाम करते हैं। किसान लोग भी हिन्दी महीने याद रखते हैं।

❖❖❖

डॉक्टरों का नैतिक दायित्व.....

दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि मरीज़ों को अनावश्यक दवाएं नहीं दी जाएं। सस्ती और कम दवाओं से काम चल सकता हो तो महंगी और ज़्यादा दवाएं नहीं लिखी जाएं। अनावश्यक टेस्ट नहीं कराये जाएं। अगर केवल दवाओं से काम चल सकता हो तो ऑप्रेशन न किया जाए। लेकिन इससे हटकर अपने स्वार्थ के लिए मरीज़ों से ज़्यादा पेसा ऐंठना नाजायज़ है। यहां हम कुछ स्थितियों की चर्चा करते हैं–

❖ एक ही दवा विभिन्न कंपनियां विभिन्न नामों से तैयार करती हैं। उनकी क़ीमतें भी अलग–अलग होती हैं, लेकिन तासीर एक जैसी ही होती है। ऐसे में डॉक्टरों को चाहिए कि वे अपने मरीज़ों को कम क़ीमत वाली दवा लेने का ही सुझाव दें। यह सोचना कि महंगी क़ीमत वाली दवा लेने का ही सुझाव दें। यह सोचना कि महंगी दवा से मरीज़ मनोवैज्ञानिक तौर पर अधिक संतुष्ट होगा सही नहीं है।

❖ कई बार दो विभिन्न दवाओं के घटक तो समान होते हैं, लेकिन किसी एक में एक तत्व अधिक होता है, जिसके कारण उसके प्रभाव में वृद्धि हो जाती है। इस आधार पर उसका मूल्य भी अधिक होता है। ऐसी स्थिति में डॉक्टर यदि उचित समझे तो मंहगी दवा का सुझाव दे सकता है।

❖ रोग की पहचान के लिए विभिन्न तरह की जांचों का महत्व बढ़ गया है, लेकिन बिना किसी ख़ास ज़रूरत के केवल जांच घरों को लाभ पहुंचाने और अपने कमीशन के लिए मरीज़ पर जांच करवाने का बोझ डालना उचित नहीं है। इसी तरह यदि ऑप्रेशन के बिना भी काम चल सकता हो तो केवल अस्पताल को लाभ पहुंचाकर अपना कमीशन पक्का करना नैतिकता और मानवता से गिरी हुई बात है। इस तरह की और भी स्थिति हो सकती है, जहां हमेशा डॉक्टरों को मरीज़ के हित को प्राथमिकता देनी चाहिए।

❖❖❖

खाद्य पदार्थों में मिलावट

किस में क्या मिलावट– सबसे पहले हल्दी को ही लें। इसमें कोढ़ा, अर्थात् धान का भूसा डोकरी हल्दी और पीला रंग मिला कर हल्दी पाउडर तैयार किया जाता है। जानकार सूत्रों के अनुसार मिलावट करने वाला व्यापारी 100 किलो कोढ़ा और 6 किलो डोकरी हल्दी में दो किलो पीला रंग मिला कर 108 किलो हल्दी तैयार करता है। फिर इस हल्दी को बाज़ार में मिलने वाली शुद्ध हल्दी के मुक़ाबले लगभग आधी क़ीमत पर बेच देता है।

ग़रीब तब्क़े के लोग एंव ग्रामीण भाई सस्ती होने के कारण हल्दी ख़रीद कर ले जाते हैं। धीर–धीरे इसके दुष्परिणामों को गले लगा लेते हैं। इस मिलावटी हल्दी के दुष्परिणामों पर एक नज़र डालें तो शरीर में सिहरन स्वाभाविक है।

मिलावटी हल्दी के सेवन से बच्चों में अंधत्व, वृद्धों में लकवा, पाचन प्रणाणी में खराबी, सूखा रोग, ठंड के दिनों में बच्चों के घाव कर देने वाली खुजली होने लगती है। हल्दी में कोढ़ा मिला होने के कारण ये बीमारी होती है। तेल निकले कोढ़े को तो जानवर तक खाने से इन्कार कर देते हैं और यही कोढ़ा हल्दी में मिलाया जाता है।

पिसी मिर्च में भी कोढ़ा मिला दिया जाता है। 100 किलो कोढ़े में दस किलो मिर्ची और दो किलो रंग मिलाकर 112 किलो मिर्ची पाउडर तैयार किया जाता है। ज़ाहिर है कि कोढ़ायुक्त होने के कारण मिर्ची का पैकेट भी सस्ता बिकेगा लेकिन ये मिर्ची मानव शरीर के लिए महंगी पड़ती है। इस मिलावटी मिर्ची से कमोबेश वही बीमारियां होती हैं जो कि मिलावटी हल्दी खाने से होती है।

गरम मसाले में भी इस घिनौने तरीक़े से मिलावट की जाती है कि आदमी की अर्थ पिपासा पर शर्म आने लगती हैं जो जानकारी हमें मिली, उसके अनुसार बकरियों की लेड़ी मिला कर गरम मसाला बनाया जाता है। गुढ़ियारी, छत्तीसगढ़ में इस तरह का एक मामला एक बार पकड़ा भी जा चुका है।

❑❑

अअ़ला हज़रत

मैंने कहा अस्सलामु अ़लेकुम
कहने लगे: लाजवाज़ अलेकुम
मैंने कहा बात क्या है भाई?
बोले पहले पेश करो सफाई
मैंने कहा वह सफाई क्या है?
बोले: मसलक मुम्हारा क्या है?
जो कोई मसलके अअ़ला हज़रत
नहीं रखता उससे सख़्त नफरत
मैंने कहा कि अअ़ला हज़रत
बेशक हैं हज़रते मुहम्मद
नबी का अदब मलहूज़ रखते हैं
किसी और को अअ़ला हज़रत नहीं कहते हैं
नबी की पैरवी है सुन्नत
गैर की पैरवी है बिदअ़त
रहमतें हों अल्लाह के नबी पर
और उनके हर उम्मती पर

नातिया दोहे

—डॉ0 अज़ीज़ ख़ैराबादी

नाम मुहम्मद 'दयानिधि[1]' 'महिमा[2] अपरम्पार[3]।
प्रथम ज्योति आकाश की, अंतिम ग्रंथाधार[4]।।
आक़ा[5] सी उपमा[6] कहां, जग इतिहास[7] बताय।
जहाँ शत्रुओं पर विजय[8], क्षमादान[9] बन जाय।।
कमली वाले का भला, कहाँ किसी से बैर।
दया—दृष्टि[10] सबके लिए, क्या अपना क्या ग़ैर।।
जड़ चेतन[11] पर एक है, दिव्य—दृष्टि[12] का मान।
आक़ा का जग में यही, सबसे श्रेष्ठ विधान[13]।।
दास[14] भले जिनमें खुले, आक़ा के गुण—द्वारा[15]।
धरती पर रौशन हुए, वही चार मीनार[16]।।
बेवाओं को आपने, दिये सहज अधिकार।
खुले यतीमों, बेकसों पर जीवन के द्वार।।
नर—नारी को आपसे, मिले पूर्ण अधिकार।
और शरीअ़त में रखा, सरल मधुर व्यवहार[17]।।
जन्मे बेटी दफ़न हो, दहशत का था रंग।
आक़ा का अंकुश[18] लगा, जागी नई उमंग।।
भटका—भटका था कहीं, जीवन का अभियान।
मानव—पथ ज्योतित हुआ[19], जब आया क़ुरआन।।

❖❖❖

नोटः—1. रहमत का ख़ज़ाना, 2. तारीफ़, 3. जिसकी कोई हद न हो, 4. आख़िरी किताब (क़ुरआन), 5. मुहम्मद, 6. मिसाल, 7. तारीख़े आलम, 8. फतह, 9. आम माफ़ी, 10. चश्मे—करम, 11. हैवानात—ओ—नबातात, 12. निगाहे—इरफ़ान, 13. सबसे बेहतर क़ानून, 14. ग़ुलाम, 15. मारफ़त के दरवाज़े, 16. चार असहाब (अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली), 17. बेहतर एख़लाक़, 18. लगाम, 19. इन्सानियत की राह रौशन हुई।

रब की रस्सी थाम लो प्यारे

हम्द में सुस्ती करो नहीं
हम्द बिना कुछ पढ़ो नहीं
बाद नबीये आखिर के अब
नबी किसी को कहो नहीं
सीख जो बोलूं सुनो ध्यान से
बुरे काम तुम करो नहीं
आपस में तुम प्रेम करो सब
किसी से घृणा करो नहीं
एक खुदा के बन्दे हो सब
शत्रु परस्पर बनो नहीं
नबी मुहम्मद के पैरो हो
अन्य के पीछे चलो नहीं
कुआँ पर हो ईमां रखते
गैर ख़ुदा से डरो नहीं
रब की रस्सी थाम लो प्यारे
फिर्क़ा बन्दी करो नहीं
इन्सानी शैतां बहकाए
जाल में उसके फंसो नहीं
जानकार से मिल कर समझो
मन ही मन में कुढ़ो नहीं
मरे हुऐ पर रहमत मांगो
बुरा तुम उनको कहो नहीं
प्यार व महब्बत काम तुम्हारा
भाई—भाई लड़ो नहीं
नाम नबी का जब भी आए
कमी अदब में करो नहीं
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
पढ़े बिना तुम रहो नहीं

इदारा

एक ख़त

कौन थे मौलवी इस्माईल?

हमारे इलाक़े में एक मौलाना के वाज़ का एलान हुआ, इशा बाद वाज था, मैं भी हाजिर हुआ, मौलाना ने न तो नमाज़ की बात की न रोज़े की जब कि इस इलाके में 70 फीसद लोग न नमाज़ पढ़ते हैं न रमजान में रोजे रखते हैं, न बुरी रस्मों से बचते हैं मौलाना ने बुरी रस्मों का जिक्र भी नहीं किया जब कि पूरे इलाक़े में जुआ, शराब आम है और कोई शादी नाच बाजे के सिवा नहीं होती, इस इलाक़े में कुछ दिनों से जब तब कुछ लोग आ रहे हैं अपना बिस्तर खुद लादे होते हैं खुद पकाते खाते हैं, किसी के मेहमान नहीं बनते, लोगों को नमाज़ के लिए मस्जिद में बुलाते हैं जो उनसे जुड़े और जुड़ रहे हैं वह नमाज़ पढ़ने लगे रमजान के रोज़े भी रखते हैं बुरे कामों से बचते हैं मैं समझता हूं कि उनका साथ दिया जाए तो इलाक़ा सुधर सकता है, और जहां–जहां उनकी बात सुनी गई सुधार आया है। मगर अफ़सोस जो मौलाना साहब वाज के लिए आए थे वह सब से पहले उन्हीं दीन का काम करने वालों पर टूट पड़े, कहने लगे कि लम्बी दाढ़ी लम्बे कुर्ते से धोखा न खाना यह कौम से ख़ारिज हैं इन की बातें न सुनना, इनको अपनी मस्जिदों में घुसने न देना, इनके गुरु घन्टाल मौलवी इस्माईल हैं जिन्होंने तकवीयतुल ईमान नाम की किताब लिखी, फिर उन्होंने एक किताब निकाली और उसे खोल खोल कर जगह–जगह से पढ़ते और कहते देखो इसमें हमारे आक़ा की तौहीन है इसलिए इसका लिखने वाला काफिर हुआ बोलो काफिर हुआ या नहीं सबने कहा जरूर हुआ, इसी तरह अपनी पूरी तकरीर में मौलवी इस्माईल को और दूसरे कई उलमा को काफिर बताते रहे और अवाम से उसकी तस्दीक़ कराते रहे। मैं खड़ा हुआ और अर्ज किया मौलाना किसी को काफिर बताने के लिए बड़े इल्म की जरूरत है, आप अगर अपने इल्म से किसी को काफिर बताते हैं तो जो आप पर भरोसा करेगा आप की बात मानेगा मगर आप हम लोगों से सवाल करते हैं कि बोलो काफिर हुआ या नहीं? आपकी यह बात ठीक नहीं मालूम होती। मौलाना जोर से चीखे, तू तो वहाबी लग रहा है निकल जा यहां से, मैंने कहा वहाबी से आपका क्या मतलब है? कहने लगे तू अब्दुल वहाब नज्दी का पैरो है मैंने कहा मैं तो यह भी नहीं जानता कि नज्द कहां है, और अब्दुल वहाब कौन हैं, मौलवी इस्माईल कौन हैं, मैंने तो अपने वालिद से कल्मा, नमाज़ सीख लिया था, नमाज़ पढ़ता हूं और जो लोग दीन सिखाते हैं और दीन फैलाते हैं उनका साथ देता हूँ, लेकिन आपने मेरे अन्दर यह तलब जरूर पैदा करदी है कि मैं जानूं कि यह अब्दुल वहाब कौन हैं, वहाबी किसे कहते हैं, यह मौलवी इस्माईल कौन हैं? उनकी तकवीयतुल ईमान

जरूर पढ़ूंगा ताकि सच व झूठ समझ सकूँ, मौलाना बोले अगर तू तकवीयतुल ईमान पढ़ेगा तो पक्का वहाबी हो जाएगा, सुनो लोगो तुम इस वहाबी से दूर रहना, मौलाना की यह खुराफाती तकरीर सुन कर अपने घर आया, इस लिससिले में आप की मदद चाहता हूं, आप अब्दुल वहाब वहाबिया, मौलवी इस्माईल के बारे में बताएं।

मैंने तकवीयतुल ईमान खरीद ली है और पढ़ रहा हूं।

जवाब– अल्लाह आपकी हिफाजत फरमाए और उन मौलाना साहब को समझ दे। अब्दुल वहाब सऊदी अरब के नज्द इलाके के एक बड़े आलिम गुज़रे हैं, बड़े नेक और स्वालेह थे। उनके ज़माने में सऊदिया में भी बड़ी बिदआत फैली हुई थी लेकिन हर आलिम उनका रद करके अवाम की मुखालफत की हिम्मत न कर पाता था, मौलाना अब्दुल वहाब के बेटे का नाम मुहम्मद था वह भी बड़े आलिम हुए उन्होंने बिदआत और बुरी रस्मों की पुरज़ोर मुखालफत की उसी वक्त सियासी तहरीक सऊदी तहरीक उठी इस तहरीक ने मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने साथ लिया, उस वक्त शरीफ़ की हुकूमत थी, उन्होंने जहां सऊदियों की मुखालफत की वहीं मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को दीनी हैसियत से बदनाम करने की कोशिश की, इस काम में शरीफ हुकूमत के हम नवा उलमा ने भी खूब–खूब हिस्सा लिया, हालांकि बाद में तहक़ीक हुई कि मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की तरफ जो गलत बातें मन्सूब की गई वह महज मुख़ालिफ़ाना प्रोपेगन्डा था, वह एक अच्छे आलिम थे, मसलकन हंबली थे, जैसे सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी हंबली थे। जब हिन्दुस्तान में फैली बिदअत व शिरकियात के खिलाफ कुछ उलमा उठे उनमें मौलवी मुहम्मद इस्माईल भी थे तो बाज़ उलमा ने उनको बदनाम करने के लिए उस वक्त के (गलत फहमी के सबब) बदनाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से उनका रिश्ता जोड़ दिया, अस्ल में तो इनका उनसे रिश्ता ही जोड़ना था तो मुहम्मदी कहते मगर आप समझ सकते हैं कि मुहम्मदी कह कर गाली देने में उनको अवाम की मुखालफत का अंदेशा हुआ तो अब्दुल वहाब के इस्मे मुबारक वहहाब से जोड़ कर वहाबी कहा और इस नाम के साथ गालियां देने में कोई हरज़ नहीं समझा अल्लाह इनको समझ दे।

मौलाना इस्माईल शहीद जो शाह वलीउल्लाह देहलवी के पोते हैं, शाह वलीउल्लाह रह0 वह हैं जिनके जरीए हिन्दुस्तान में इल्मे हदीस फैला उनके चार बेटे थे, शाह अब्दुल गनी, शाह अब्दुल कादिर, शाह रफ़ीउद्दीन, और शाह अब्दुल अज़ीज, अल्लाह तआला इन सब पर अपनी रहमत की बारिश करे यह चारों भाई अपने वालिदे नामदार शाह वलीउल्लाह रह0 के शागिर्द थे और कुर्आन व हदीस का ऊँचा इल्म रखते थे इन सबसे कुर्आन व हदीस का इल्म खूब फैला, शाह रफ़ीउद्दीन रह0 ने कुर्आन मजीद का बामुहावरा उर्दू ज़बान में

तर्जमा किया, शाह अब्दुल क़ादिर रह0 ने उर्दू ज़बान में कुर्आन मजीद का लफ़्ज़ी तर्जुमा किया और तफ़सीर लिखी, शाह अब्दुल अज़ीज रह0 ने भी तफ़सीर लिखी, शाह मुहम्मद इस्माईल शाह अब्दुल गनी के साहबज़ादे थे, किताब व सुन्नत का तमाम तर इल्म अपने चचा शाह अब्दुल क़ादिर और शाह अब्दुल अज़ीज से हासिल किया, और सय्यिद अहमद शहीद रायबरेलवी से बैअत हुए शायद इन्हीं निस्बतों को देख कर मौलाना अहमद रज़ा खाँ ने तमहीदे ईमान में लिखा कि मैं उनको काफिर नहीं कहता और इसी पर फ़त्वा है।

मौलाना इस्लामईल, शैख़ सय्यिद अहमद रायबरेलवी के साथ सिक्खों से लड़ते हुए बालाकोट के मैदान में 1831 ई0 में शहीद हो गये।

आप तकवीयतुल ईमान पढ़ रहे हैं पढ़िये जहाँ इश्काल नज़र आये मुझे लिखिए इन्शा अल्लाह मैं मुतमइन करने की कोशिश करुँगा।

❖❖❖

मदरसे के छात्रों से .....

में लगे हैं, मामूली बात नहीं है। लोग समझते नहीं हैं। जो कुर्आन व हदीस सीखे और इधर–उधर के कामों में लग जाएं तो अल्लाह ने मानो उनको निकाल दिया। वह इस लायक नहीं हैं कि वह कुर्आन व हदीस को पढ़ाएं और कुर्आन व हदीस पर अमल करें, इसलिए अल्लाह ने नापसन्द किया और निकाल दिया।

शुक्र अदा कीजिए– अब यदि कोई पढ़ा रहा है तो उस पर शुक्र अदा करना चाहिए, अल्लाह के सामने दो रकअ़त शुक्राने की नमाज़ पढ़ना चाहिए कि अल्लाह ने हमें ये सौभाग्य प्रदान किया, क्योंकि हम तो इस लायक नहीं थे तो अल्लाह इस नेअ़मत में इज़ाफा करेगा अर्थात् कुर्आन समझने की दौलत मिलेगी, हदीस पर अमल करने की नेमत मिलेगी और लोगों में इज़्ज़त मिलेगी। अल्लाह के यहाँ मक़बूलियत मिलेगी और दुनिया में महबूबियत मिलेगी लेकिन शुक्र अदा करना पड़ेगा। कभी ये ख़्याल न आए कि हम क्यों पढ़ा रहे हैं मदरसे में, या क्यों पढ़ा रहे हैं मदरसे में, तो ये सबसे बड़ी नाशुक्री है। जैसे हमारे बहुत से स्टूडेन्ट हैं, जिनके मुँह में पानी भर आता है कॉलेज के लड़कों को देख कर, और उनकी पैंट–कोट देखकर, वह सोचते हैं कि हम वहां चले जाएं, तो ज़ाहिर है कि नाशुक्री शुरु हो गई और ये अल्लाह की नाशुक्री है।

आपको तो अल्लाह ने इतनी बड़ी दौलत अता की है और आप हैं कि दूसरों की ओर लालच की निगाह से देख रहे हैं, तो आपको क्या मिलेगा, यहीं से बेबरकती शुरु हो जाती है कि आप मजबूरन यहां लाये गए हैं, आपको बाँध कर, पकड़कर यहां लाया गया है कि आप सुबह से शाम तक हाय–हाय कर रहे हैं और हाय–हाय का नतीजा ये है कि नक़्काली करने लगे हैं, नक्क़ाली भी नाशुक्री की अलामत है, वर्ना आदमी अपने से कम आदमी की नक़्क़ाली नहीं करता, जिसको अपने से बड़ा और अच्छा समझता है उसी को महबूब बनाता है, उसी की नक़्क़ाली करता है। ❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

सपा की जीत के लिए कांग्रेस, भाजपा ज़िम्मेदार–

बसपा सुप्रीमो मायावती ने आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि सपा की जीत के लिए हमारी पार्टी काँग्रेस तथा भाजपा को जिम्मेदार मानती है। जिनके चुनाव के समय राजनीतिक स्वार्थवश उठाए गए गलत कदमों के कारण सपा जीती।

सपा की जीत– भाजपा के सत्ता में आने की आशंका से घबराए मुसलमानों के करीब 70 प्रतिशत वोट सपा को मिल गए। इसके अलावा प्रदेश में दलितों को छोड़कर ज्यादातर हिन्दू वोट खासतौर पर अगड़ी जातियों के वोट कई पार्टियों में बंट जाने के कारण इसका सीधा लाभ सपा के उम्मीदवारों को मिला।

सपा का वादा ताकि सनद रहे–

समाजवादी पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में कई वादे किए थे। घोषणात्र के कुछ अहम वादों को यहां पेश कर रहें हैं ताकि अखिलेश के नेत्त्व में बनने वाली नई सरकार को सनद रहे।

❖ बारहवीं पास सभी विद्यार्थियों को एक–एक लैपटाप मिलेगा।

❖ कक्षा दस पास सभी विद्यार्थियों को टैबलेट कम्प्यूटर मिलेगा।

❖ बेरोजगार युवाओं को बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा।

❖ हार्ट, कैंसर, लीवर, किडनी के मरीजों का मेडिकल कॉलेज में मुफ़्त इलाज।

❖ उच्च शिक्षा के लिए 5 लाख से कम आय वाले परिवारों के बच्चों की फीस माफ

❖ हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त लड़कियों को कन्या विद्या धन व साइकिल

❖ कक्षा दस पास मुस्लिम लड़कियों को शिक्षा या शादी के लिए 30 हजार रूपए

❖ विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में छात्रसंघों की बहाली होगी

❖ सरकारी उर्दू मीडियम स्कूलों की स्थापना की जाएगी

❖ सच्चर आयोग और रंगनाथ मिश्र कमेटी की रिपोर्ट की सिफारिशों पर अमल

❖ मुस्लिमों को दलितों की तरह आबादी के आधार पर अलग से आरक्षण

❖ किसानों की उपज का लागत मूल्य निर्धारित करने के लिए आयोग 65 वर्ष की उम्र प्राप्त करने वाले छोटी जोत के किसानों के लिए पेंशन

राष्ट्रपति की विदेश यात्राओं पर 205 करोड़ रूपये खर्च–

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल की विभिन्न विदेशी यात्राओं पर 205 करोड़ रूपये का खर्च आया है। उन्होंने इस मामले में अपने सभी पूर्ववर्तियों को पीछे छोड़ दिया है। पाटिल जुलाई 2007 में देश की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं। उस समय से वह 12 विदेश यात्रा कर चुकी हैं। उनके कार्यकाल में चार महीने बाकी हैं और उनका दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर जाने का कार्यक्रम है। 'सूचना का अधिकार' से मिली जानकारी के अनुसार, प्रतिभा के विदेश दौरे में एयर इंडिया के विमानों पर 169 करोड़ रूपये का खर्च आया।

उन्होंने यात्रा के लिए अक्सर चार्टर्ड विमान बोइंग का इस्तेमाल किया। उनकी यात्राओं में उनके परिवार के सदस्य भी होते थे। ❑❑